यागमण्डल विधान

(प्रतिष्ठा तिलक ग्रंथ के आधार से)

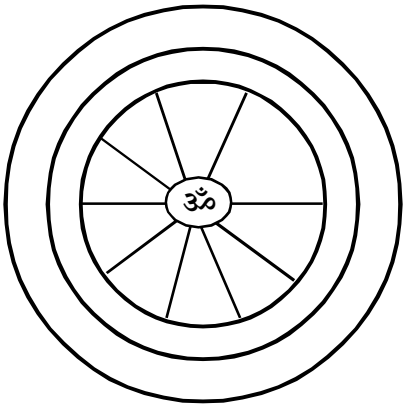

पद्यानुवाद-साहित्य रत्नाकर

आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज

प्रकाशक

विशद साहित्य केन्द्र

कृति – **आर्षमार्गीय यागमण्डल विधान**

मंगल आशीष – **गणाचार्यश्री 108 विराग सागर जी महाराज**

कृतिकार – **साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री विशद सागरजी महाराज**

संकलन – **मुनिश्री विशाल सागरजी महाराज**

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - आर्यिका 105 श्री भक्तिभारती, क्षुल्लिका 105 श्री वात्सल्य भारती

संपादन - ब्र0 ज्योति दीदी 9829076085
ब्र0 आस्था दीदी 9660996425
ब्र0 सपना दीदी 9829127533
ब्र0 आरती दीदी–8700876822

प्राप्ति स्थल - 1. सुरेश जी सेठी,
पी-198, गली नं. 3, शांति नगर, जयपुर मो.9413336017
2. विशद साहित्य केन्द्र-9416888879
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी-रेवड़ी
3. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली
4. रोहिणी सेक्टर-3 दिल्ली-9810570747

मूल्य - 101/-रुपये मात्र

पुण्यार्जक :
अनिल कुमार, संदीप कुमार जी जैन
श्री शिखर चंद जी गंगवाल, औरंगाबाद बिहार 9334742042
महेन्द्र जी वाकलीबाल, औरंगाबाद बिहार 9430802002
श्री महेन्द्र जी सेठी, श्रीमति नीलम जैन, औरंगाबाद बिहार 9934909945

''जिनार्चना''

दोहा–विधि विधान से बिम्ब या, वेदि प्रतिष्ठा होय।
मनोकामना पूर्ण हो, आगत बाधा खोय।।

प्रतिष्ठा तिलक नामक प्राचीन प्रतिष्ठा ग्रन्थ में संस्कृत का यागमंडल विधान श्री नेमिचन्द्र जी द्वारा रचित था उसी को आधार लेकर साहित्य रत्नाकर **आचार्य श्री विशद सागर जी** महाराज ने प्रस्तुत यागमंडल विधान की सरल सुबोध शैली में रचना की है। गणिनी आर्यिका रत्न श्री ज्ञानमती माताजी ने पूर्व में यागमण्डल विधान की रचना की यहाँ मन्त्र व प्रस्तावना उनकी पुस्तक से संकलित है।

भक्तगण मनोयोग से सम्पूर्ण विधि से यह विधान करें।

इसमें सर्वप्रथम पंचपरमेष्ठी की ५ पूजाएँ लघु रूप से दी हैं इसमें बीच की कर्णिका में अर्हंत एवं चार दल के कमल में चारों परमेष्ठी की स्थापना की जाती है पुनः भूतकालीन वर्तमान कालीन एवं भविष्यकालीन तीन चौबीसी भगवन्तों की आराधना स्वरूप तीन अर्घ्य है।

जिन्हें मंडल के ऊपर स्वर वलय, मंत्र वलय और ठकार वलय में स्थापित किया गया है अर्थात् उन तीन वलयों में उक्त तीनों चौबीसी के तीन अर्घ्य चढ़ाये जाते हैं। इसके पश्चात् अष्ट दल कमल में चार दिशा वाले दलों में क्रमशः अर्हन्मंगल, लोकोत्तम, शरण पूजा, सिद्ध मंगल पूजा, साधू मंगल पूजा और धर्म मंगल पूजा के चार अर्घ्य चढ़ाये जाते हैं तथा विदिशा के चारों दलों में जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, जिनचैत्यालय की पूजा सम्बन्धी एक-एक अर्घ्य चढ़ते हैं।

पुनश्च अगले वलय में अष्टदल कमल बनता है उसमें जया आदि देवियों के आठ अर्घ्य चढ़ाना चाहिए और आगे सोलह दल कमल में रोहिणी आदि सोलह देवियों के अर्घ्य, चौबीस दल कमल में चौबीस जिनमाताओं के अर्घ्य तथा बत्तीस दल के कमल में बत्तीस इन्द्रों के अर्घ्य

चढ़ाये जाते हैं। इसके पश्चात् चतुष्कोण मंडल में पन्द्रह तिथि देवताओं के अर्घ्य, नवगृह के नौ अर्घ्य, चौबीस-चौबीस अर्घ्य शासन देव-देवियों के, आठ दिक्कन्याओं के आठ अर्घ्य, दशदिक्पालों के दश अर्घ्य, द्वारपाल के चार अर्घ्य, यक्षविजय आदि के चार अर्घ्य एवं ईशानकोंण में अनावृत्त देव का अर्घ्य है। अनन्तर ब्रह्मेन्द्र और अहमिन्द्र को पुष्पाञ्जलिं करके मंत्रपूर्वक मंडल के ऊपर अष्ट मंगल द्रव्यों की स्थापना कराई गई है।

पुनश्च मंत्रपूर्वक आठ आयुध स्थापित कराके आठ पताकायें (ध्वजाएँ) स्थापित कराते हैं, इसके बाद आठ कलश, चार बाण, सिद्धारथ, यवारक और शिला (शिल-बट्टा) स्थापित कराने की विधि है।

यह सम्पूर्ण विधि प्रतिष्ठा तिलक ग्रन्थ के अनुसार ही इस यागमण्डल विधान में प्रदर्शित की गई है। वेदी शुद्धी, पंचकल्याणक प्रतिष्ठा जैसे महान आयोजन को निर्विघ्न एवं अतिशयपूर्ण सम्पन्न करने हेतू विद्वानों को-प्रतिष्ठाचार्यों को यह पूरा विधान यजमानों के द्वारा पंचकल्याणक वेदी प्रतिष्ठा आदि में बैठे इन्द्र-इन्द्राणियों द्वारा ज्यों का त्यों कराना चाहिए, इसमें किसी प्रकार का संशोधन या परिवर्तन नहीं करना चाहिए क्योंकि जिस प्रकार विवाह आदि मांगलिक कार्यों में ग्रहस्थजन समस्त सांसारिक परम्पराओं का निर्वाह करते हुए सभी को यथायोग्य बुलाकर सम्मान करते हैं उसी प्रकार पंचकल्याणक में चारों प्रकार के देवों का आह्वानन् कर उन्हें उनका यज्ञभाग समर्पित करने हेतू यह मांगलिक क्रिया है। इसमें किंचित् भी प्रमाद करने पर विघ्न उपस्थित होने की सम्भावना रहती है।

इस पूजा विधान में पंचपरमेष्ठी के पाँच, तीन चौबीसी के तीन, अर्हन्तमंगलादि के चार और जिनधर्म जिनागम, जिनचैत्य, जिन चैत्यालय इन ५+३+४+१+ १+१+१=१६ को सोलह देवता नाम से सम्बोधित किया गया है।

पंचकल्याणक वेदी प्रतिष्ठा में प्रतिष्ठाचार्य विद्वत वर्ग सम्पूर्ण क्रिया विधि से यह पूजा विधान सम्पादित करें पुनश्च गुरुदेव के श्री चरणों में इस महाउपकार के लिए नमोस्तु-३

''मुनि विशाल सागर''

अथ यागमण्डलोल्लेखनविधानम्

दोहा–बिम्ब प्रतिज्ञा आदि में, श्री जिन का गुणगान।
याज्ञमण्डल करते विशद, सब यजमान विधान।।

(अब याज्ञमण्डल बनाने की विधि बताते हैं।)

इस प्रकार मंत्रपूर्वक चूर्णों की स्थापना करके वेदी के बीचमें– यागमण्डल के बीच में पीतचूर्ण से कर्णिका बनावें। श्वेत, पीत, हरे, लाल और काले चूर्णों से क्रम से पाँच गोल मंडल बनावें। उसके बाहर चौकोन वाले चार द्वार सहित चौकोन ही पाँच मंडल बनावें, पुनः उसके बाहर वज्रसहित पीले रंग के पृथ्वीमंडल बनावें, अर्थात् मंडल के बाहर चारों तरफ का स्थान पीले चूर्ण से भर दें। पुनः गोलाकार मंडलों में क्रम से चार, आठ, सोलह, चौबीस और बत्तीस दलों के कमलों को लालवर्ण से बनाकर सुवर्णशलाका से या अपामार्ग-चिरचिरा की लेखनी या डाभ से कर्णिका के ठीक बीच में निम्नलिखित मंत्र लिखें।

इन मंत्रों को लिखने का क्रम बताते हैं–

कर्णिका में ''ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं स्वाहा। इस अर्हन्मंत्र को लिखें पुनः इस कर्णिका के चारों तरफ चार दल के कमल में पूर्व दिशा में ''ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं'', दक्षिण दिशा के दल में ''ॐ ह्रीं णमो आइरियाणं'', पश्चिम दिशा के दल में ''ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं'' तथा उत्तर दिशा के दल में ''ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं'' लिखें। इन मंत्रों को अनाहत, अर्हत् बीज, मायाबीज, श्रीकार और प्रणवमंत्र से पृथक्-पृथक् वेष्टित करके, इनके बाहर सोलह स्वर के वलय को, पास में स्थित झौंकार द्वय से सहित कर, उसके बाहर ''ॐ ह्रीं श्रीं हं अर्हत्सिद्धकेवलिभ्यः स्वाहा।'' इस मंत्रवलय को बनावें। इसके बाहर एक ''ठकार'' वलय बनावें।

अनंतर आठ दल वाले कमल में चार दलों पर-पहले पूर्वदिशा के दल में ''ॐ अरहंत मंगलं, अरहंत लोगुत्तमा, अरहंतसरणं पव्वज्जामि स्वाहा'' यह मंत्रलिखें। दक्षिण दल में ''सिद्धमंगलं, सिद्धलोगुत्तमा, सिद्धसरणं पव्वज्जामि स्वाहा'' लिखें। पश्चिम दिशा के दल में ''साहु मंगलं, साहु

लोगुत्तमा, साहुसरणं पव्वज्जामि स्वाहा'' ऐसा लिखें। उत्तर दिशा के दल में ''केवलिपण्णत्तो धम्मं मंगलं, धम्मो लोगुत्तमा, धम्मो सरणं पव्वज्जामि स्वाहा'' यह मंत्र लिखें। पुनः इसी आठ दल कमल में आग्नेय दिशा के दल में ''ॐ श्रीं ह्रीं हूं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः स्वाहा'', नैऋत्य विदिशा के दल में ''ॐ श्रीं ह्रीं हूं जिनागमेभ्यः स्वाहा'', वायव्यविदिशा के दल में ''ॐ श्रीं ह्रीं हूं जिनचैत्येभ्यः स्वाहा'', और ईशान विदिशा के दल में ''ॐ श्रीं ह्रीं हूं जिनचैत्यालयेभ्यः स्वाहा'' इन मंत्रों को लिखें।

पुनः चार दलों के अग्रभाग पर ''ॐ'' लिखें और चार विदिशा के अंतराल में ''झ्रौं'' लिखें। इन सभी को ''ह्रीं'' से तीन बार वेष्टित करके ''क्रों'' से संरुद्ध करें। आगे के आठ दल वाले कमल में पूर्वदिशा के दल में ''ॐ जयायै स्वाहा।'' दक्षिण दिशा के दल में ''ॐ विजयायै स्वाहा।'' पश्चिम दिशा में ''ॐ अजितायै स्वाहा।'' दक्षिण दिशा के दल में ''ॐ विजयायै स्वाहा।'' पश्चिम दिशा में ''ॐ अजितायै स्वाहा।'' उत्तरदिशा के दल में ''ॐ अपराजितायै स्वाहा।'' ऐसे मंत्र लिखें पुनः विदिशा के दलों में अर्थात् आग्नेयविदिशा में ''ॐ जंभायै स्वाहा'', नैऋत्यविदिशा के दल में ''ॐ मोहायै स्वाहा'', वायव्य विदिशा के दल में ''ॐ स्तंभायै स्वाहा'' और ईशान विदिशा के दल में ''ॐ स्तंभिन्यै स्वाहा'' इन मंत्रों को लिखें। अनन्तर इन्हीं आठ दलों के अन्तराल में ''ह्रीं'' और दलों के अग्रभाग में ''क्रौं'' बीजाक्षर लिखें।

अनन्तर सोलह दल वाले कमल में क्रम से एक-एक दलों पर रोहिणी आदि सोलह विद्या देवताओं के मंत्र लिखें। उनका स्पष्टीकरण-१. ॐ ह्रीं रोहिण्यै स्वाहा, २. ॐ ह्रीं प्रज्ञप्त्यै स्वाहा, ३. ॐ ह्रीं वज्रशृंखलायै स्वाहा, ४. ॐ ह्रीं वज्रांकुशायै स्वाहा, ५. ॐ ह्रीं जांबूनदायै स्वाहा, ६. ॐ ह्रीं पुरुषदत्तायै स्वाहा, ७. ॐ ह्रीं काल्यै स्वाहा, ८. ॐ ह्रीं महाकाल्यै स्वाहा, ९. ॐ ह्रीं गौर्यै स्वाहा, १०. ॐ ह्रीं गांधार्यै स्वाहा, ११. ॐ ह्रीं ज्वालामालिन्यै स्वाहा, १२. ॐ ह्रीं मानव्यै स्वाहा, १३. ॐ ह्रीं वैरोट्यै स्वाहा, १४. ॐ ह्रीं अच्युतायै स्वाहा, १५. ॐ ह्रीं मानस्यै स्वाहा, १६. ॐ ह्रीं महामानस्यै स्वाहा।

इन सोलह मंत्रों के कमल दलों के अन्तराल में ''क्लीं'' पुनः दलों के अग्रभाग में ''ब्लूं'' ये बीजाक्षर लिखें।

आगे चौबीस दलों के कमल में क्रम से एक-एक दलों पर जिनमाता के नाम लिखें। उनके मंत्र निम्न प्रकार हैं–

ॐ ह्रीं मरुदेव्यै स्वाहा। ॐ ह्रीं विजयायै स्वाहा। ॐ ह्रीं सुषेणायै स्वाहा। ॐ ह्रीं सिद्धार्थायै स्वाहा। ॐ ह्रीं मंगलायै स्वाहा। ॐ ह्रीं सुषीमायै स्वाहा। ॐ ह्रीं पृथ्वीषेणायै स्वाहा। ॐ ह्रीं लक्ष्मणायै स्वाहा। ॐ ह्रीं रामायै स्वाहा। ॐ ह्रीं सुनंदायै स्वाहा। ॐ विष्णुश्रियै स्वाहा। ॐ ह्रीं जयायै स्वाहा। ॐ ह्रीं जयस्यामायै स्वाहा। ॐ ह्रीं सुव्रतायै स्वाहा। ॐ ह्रीं सुप्रभायै स्वाहा। ॐ ह्रीं ऐरिण्यै स्वाहा। ॐ ह्रीं सुमित्रायै स्वाहा। ॐ ह्रीं प्रभावत्यै स्वाहा। ॐ ह्रीं पद्मावत्यै स्वाहा। ॐ ह्रीं वप्रायै स्वाहा। ॐ ह्रीं विनूतायै स्वाहा। ॐ ह्रीं शिवदेव्यै स्वाहा। ॐ ह्रीं देवदत्तायै स्वाहा। ॐ ह्रीं प्रियकारिण्यै स्वाहा।''

इस कमल के बाहर प्रत्येक दलों के अन्तराल में ''झं'' बीजाक्षर लिखें और दलों अग्रभाग में ''वं'' बीजाक्षर लिखें।

आगे बत्तीस दल के कमल में एक-एक दलों पर क्रम से बत्तीस इन्द्रों के मंत्र लिखें। जैसे–

ॐ ह्रीं असुरेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं नागकुमारेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं द्वीपकुमारेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं उदधिकुमारेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं स्तनितकुमारेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं दिक्कुमारेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अग्निकुमारेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं वातकुमारेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं किम्पुरुषेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं महोरगेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं गंधर्वेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं यक्षेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं भूतेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं सोमेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं सनत्कुमारेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं माहेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं शतारेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं आनतेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं आरणेन्द्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्राय स्वाहा।

इन मंत्र दलों के बाहर अन्तराल में ''झं'' और दलों के अग्रभागों में ''वं'' बीजाक्षर लिखें। इन सभी को ''ह्रींकर'' से तीन बार वेष्टित करके ''क्रों'' से रोककर जलमंडल से वेष्टित कर देवें।

अनन्तर जो चौकोन पाँच मंडल बनाये हैं उनमें से चार में क्रम से तिथि देवों के, नवग्रहों के, चौबीस यक्षों के और चौबीस यक्षिणियों के मंत्रों को लिखें। जैसे–ॐ यक्ष, वैश्वानर, राक्षस, नधृत, पन्नग, असुर, सुकुमार, पितृ, विश्वमालि, चमर, वैरोचन, महाविद्य, मार विश्वेश्वर, पिंडाशिभ्यः स्वाहा।

दूसरे चौकोन मंडल में–ॐ रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतुभ्यः स्वाहा।

तृतीय मण्डल में–ॐ गोमुख-महायक्ष-त्रिमुख-यक्षेश्वर-तुंबुर-पुष्पयक्ष-मातंगयक्ष-श्याम-अजित-ब्रह्मयक्ष-ईश्वर-कुमार-षण्मुख-पाताल-किन्नर-गरुड़-गंधर्व-रवेन्द्र-कुबेर-वरुण-भृकुटि-गोमेध–धरणेन्द्र-मातंगयक्षेभ्यः स्वाहा।

चतुर्थ मंडल में–ॐ चक्रेश्वरी-अजिता-नम्रेक्षी-दुरितारि-संसारिदेवी-मोहनी-मानवी-ज्वालामालिनी-भृकुटिदेवी-चामुण्डी-गोमेधयक्षी-विद्युन्मालिनी-विजृंभिणी-परभृताकंदर्पादेवी-गांधारिण-काल-अनाजतजा-सुगंधिनी-कुसुममालिनी कूष्माण्डिनी-पद्मावती-सिद्धायिनीयक्षीभ्यः स्वाहा।

पाँचवें मंडल में–ॐ श्रीदेवी-ह्रीदेवी-धृतिदेवी-कीर्तिदेवी-बुद्धिदेवी-लक्ष्मीदेवी-शांतिदेवी-पुष्टिदेवीभ्यः स्वाहा।

इसी पाँचवें मंडल में–दिक्पालों के मंत्र लिखें–इन्द्र-अग्नि-यम-नैऋत्य-वरुण-पवन-कुबेर-ईशान-धरणेन्द्र-सोमेभ्यः स्वाहा।

अनंतर पूर्व आदि चारों द्वारों में–सोम-यम-वरुण-धनद मंत्र लिखें। पुनः वेदी के-यागमण्डल के पूर्वादि चारों दिशाओं में विजय, वैजयंत, जयंत और अपराजित, इन चारों के मंत्रों को लिखें।

ईशानकोण में अनावृतयक्ष के मंत्र को लिखें।

ब्रह्मेन्द्र के ऊपर लौकांतिक मंत्र को और अच्युतेन्द्र के ऊपर अहमिन्द्र मंत्र को लिखकर पृथ्वीमंडल में आठ मंगल द्रव्य, आठ आयुध और आठ पताका के मंत्रों को लिखकर आगे कही गई विधि से उनको

स्थापित करके यथास्थान आठ कलशों की स्थापना करके पंचवर्णी सूत्र से वेष्टित करके वेदी-मंडल के चारों कोनों पर चार बाण, सिद्धार्थ-सफेद सरसों, यवारक-उगे हुए धान्यांकुर कुंडों की स्थापना करें। वेदी–मंडल के आगे या मंडल पर आगे पाषाण का सिलबट्टा स्थापित करें।

अनंतर महोत्सवपूर्वक महार्घ्य को चढ़ावें। तीन बार प्रदक्षिणा देकर प्रणाम करें, पुनः धूपादि से यंत्र को (मंडलको) विभूषित करें।

तत्पश्चात् चार या आठ जप करने वाले श्रावकों को वेदी के चारों तरफ बिठाकर श्वेत सुगंधित पुष्पों से अनादिसिद्धमंत्र की जाप्य करावें, इस तरहयागमण्डल आराधना को पूर्ण करें। इस प्रकार यागमण्डल बनाने की विधि पूर्ण हुई।

●

अथ यागमण्डलवर्तन विधान

(ज्ञानोदय छन्द)

हे नागाधिप! श्वेत चूर्ण से, यागमण्डल वेदी में जान।
पीत चूर्ण पीताम्बर धनपति, नीलवर्ण में नीलम मान।।
लालचूर्ण से रक्ताकल्पक, कृष्ण चूर्ण ले कृष्णाप्रभ।
रत्न चूर्ण पाँचों के रंग से, मण्डल रचना कर सम्प्रभ।।१।।

ॐ ह्रीं श्वेतपीतहरितारुणकृष्णमणिचूर्णं स्थापयामि स्वाहा। पंचचूर्णस्थापनमंत्रः।

नागराज भो! चन्द्रकांति तनु, वस्त्राभरण श्वेत शुभकार।
श्वेत विमानारूढ़ माल सित, श्वेत चूर्ण लेकर मनहार।।
श्री जिन यज्ञ सुविधि में आके, याग मण्डल शुभ रचें महान।
श्वेत रत्न से सुन्दर सज्जित, आन सजाओ आभावान।।१।।

ॐ ह्रीं नागराजाय अमिततेजसे, स्वाहा। (श्वेत चूर्ण स्थापन करना)।

पीत कांतिधर यज्ञ इन्द्र भो!, पीत वस्त्र आभूषण वान।
पीत माल युत पीत यान चढ़, रत्न चूर्ण ले महति महान।।

श्री जिन यज्ञ सुविधि में आके, याग मण्डल शुभ रचे महान।
पीत रत्न से सुन्दर सज्जित, आन सजाओ आभावान।।२।।

ॐ ह्रीं हेमप्रभाय धनदाय अमिततेजसे स्वाहा। (पीत चूर्ण स्थापन करना)

नील वर्ण धारी देवेन्द्र हे! नील वस्त्र आभूषण वान।
नील माल्य युत नीलयान चढ़, नील चूर्ण ले अतिशय वान।।
श्री जिन यज्ञ सुविधि में आके, याग मण्डल शुभ रचें महान।
नील मणी से सुन्दर सज्जित, आन सजाओ आभावान।।३।।

ॐ ह्रीं हरित्प्रभाय मम शत्रुमथनाय स्वाहा। (हरित चूर्ण स्थापन करना)।

पद्मांकित रक्ताम्बर माला, पद्माभूषण युक्त सुरेश।
पद्मयान चढ़ पद्मराग मणि, चूर्ण हाथ में लिए विशेष।।
श्री जिन यज्ञ सुविधि में आके, याग मण्डल शुभ रचें महान।
लाल रत्न से सुन्दर सज्जित, आन सजाओ आभावान।।४।।

ॐ ह्रीं रक्तप्रभाय मम सर्वशंकराय वषट् स्वाहा। (लाल चूर्ण स्थापित करना)

कृष्ण कांतिधारी कृष्णांबर, माला भूषण युक्त प्रधान।
कृष्ण यान आरूढ़ कृष्ण ले, अपने हाथों चूर्ण महान।।
श्री जिन यज्ञ सुविधि में आके, याग मण्डल शुभ रचें महान।
कृष्ण रत्न से सुन्दर सज्जित, आन सजाओ आभावान।।५।।

ॐ ह्रीं कृष्णप्रभाय मम शत्रुविनाशनाय फट् घे घे स्वाहा। (कृष्णचूर्ण स्थापित करना) इस प्रकार पंचवर्णचूर्ण स्थापन विधि पूर्ण हुई।

वज्र स्थापन विधि

सन्मंगलहित यागमण्डल में,बाह्य सर्वभू मण्डल जान।
चारों कोंणों पर इक-इक शुभ, हीरा मोती रखें महान।।
वज्रपाणि हे इन्द्र! यहाँ पर, यज्ञ सुविधि में आके आप।
वज्र चूर्ण से मण्डल रचना, करो क्षेमकर मैटे ताप।।

(वेदीकोणेंषु प्रत्येकं हीरकं न्यसेत्।)

(यागमण्डल पर चारों कोणों पर एक-एक हीरा स्थापित करें)

यागमण्डल विधान

''मंगलाचरण''

वेदी मध्य कर्णिका चउ दल, अठ दल कमल की रचनाकार।
आठ व चौबिस बत्तिस दल के, कमल बाह्य रचिए शुभकार।।
चतुष्कोंण के पाँच सु मण्डल, चउ दिश द्वार बनाएँ चार।
मंत्र सहित नव देव-देव की, अर्चा करके बारम्बार।।१।।

ॐ परब्रह्मणे नमो नमः स्वस्ति स्वस्ति जीव जीव नन्द नन्द वर्धस्व वर्धस्व, विजयस्व विजयस्व, अनुशाधि अनुशाधि पुनीहि पुनीहि पुण्याहं पुण्याहं मांगल्यं मांगल्यं पुष्पांजलिः।

(ताटंक छन्द)

अर्हत् कर्म घातिया नाशी, त्रिभुवन पति सर्वज्ञ महान।
सर्व अमंगल हारी हे जिन! करते हैं हम तव गुणगान।।
ऋद्धि विक्रिया धर इन्द्रादिक, करो विघ्न सारे परिहार।
हो सानिध्य संघ चउ विध शुभ, सर्व जगत में जो हितकार।।२।।

प्रभावकसिंहसान्निध्यविधानाय समंतात् पुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

सभी आर्य साधर्मी जन भी, सुरगण निज-निज आयुध वान।
निज-निज वाहन पर चढ़कर के, आओ पूजा करो महान।।
लोकान्तिक अहमिन्द्र सभी मिल, होकर के अनुमोदन वान।
याग सुविधि में विघ्न विनाशी, होकर करो प्रभू गुणगान।।३।।

त्रिभुवनसाधर्मिकाध्येषणाय समंतात् पुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

सर्व शक्ति युत शब्द ब्रह्म युत, मंत्र महा महिमा शाली।
सर्व तत्त्व का प्रगटायक है, परम ब्रह्म गुण मणि माली।।
परम ज्योतिमय दिव्य शास्त्र है, द्वादशांग वाणी शुभकार।
विशद ज्ञान का मूल बीज है, आह्वानन कर मंगलकार।।४।।

शब्दब्रह्मावर्जनाय कर्णिकामध्ये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

परमेष्ठी है पंच मान्य जग, उन सबका करना है ध्यान।
शब्द ब्रह्म है परम ब्रह्म जो, जिनका करते शुभ गुणगान।।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रैकालिक जो हैं अर्हन्त।
यंत्र कर्णिका में पूजा कर, पुष्पाञ्जलि करते गुणवंत।।५।।

परब्रह्मयज्ञप्रतिज्ञापनाय कर्णिकान्तः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

दोहा–याग मण्डल की अर्चना, करके जग के जीव।
विशद भाव अर्पित करें, पावें पुण्य अतीव।।

।।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

यागमण्डल समुच्चय पूजा

स्थापना

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, साधू परमेष्ठी गुणवान।
त्रय कालिक चौबिस तीर्थंकर, शत इन्द्रों से पूज्य महान।।
मंगल उत्तम शरण चार शुभ, जैन धर्म श्री जिन के धाम।
जैनागम जिन प्रतिमाओं का, आह्वानन कर करें प्रणाम।।
दोहा–आओ तिष्ठो मम हृदय, सब मेरे आराध्य।
हों साधक मेरे लिए, पाने में निज साध्य।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमगुरु त्रैकालिकतीर्थंकर-चतुर्मंगललोकोत्तमशरण-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमगुरु त्रैकालिकतीर्थंकर-चतुर्मंगललोकोत्तमशरण-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमगुरु त्रैकालिकतीर्थंकर-चतुर्मंगललोकोत्तमशरण-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(ज्ञानोदय छन्द)

ज्ञान सिन्धु से पूरित होकर, भी यह चेतन जलती है।
जन्म-जन्म से सुख की आशा, मन के अन्दर पलती है।।

भाव सहित हम अर्हतादि की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
चेतन को कुन्दन करने की, विशद भावना भाते हैं।।१।।

ॐ ह्रीं पंचपरमगुरु त्रैकालिकतीर्थंकर-चतुर्मंगल लोकोत्तम शरण-जिनधर्म-जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्य: जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

है स्वभाव शीतल चंदन सा, द्वेषाग्री में झुलस रहे।
प्रभु की सौम्य मूर्ति लखकर मन, के विकल्प सब सुलझ रहे।
भाव सहित हम अर्हतादि की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
चेतन को कुन्दन करने की, विशद भावना भाते हैं।।२।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमगुरु त्रैकालिकतीर्थंकर-चतुर्मंगललोकोत्तमशरण-जिनधर्म-जिनागम जिनचैत्यचैत्यालयेभ्य: संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पुर के वासी हैं हम, सक्षय सुख की चाह रही।
है धिक्कार चाह मन की जो, प्राप्त करे ना राह सही।।
भाव सहित हम अर्हतादि की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
चेतन को कुन्दन करने की, विशद भावना भाते हैं।।३।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमगुरु त्रैकालिकतीर्थंकर-चतुर्मंगललोकोत्तमशरण-जिनधर्म-जिनागम जिनचैत्यचैत्यालयेभ्य: अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान पुष्प से पुष्पित चेतन, अज्ञानी हो भटकाए।
काम भोग की आंधी में जो, सदियों से गोते खाए।।
भाव सहित हम अर्हतादि की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
चेतन को कुन्दन करने की, विशद भावना भाते हैं।।४।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमगुरु त्रैकालिकतीर्थंकर-चतुर्मंगललोकोत्तमशरण-जिनधर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्य: कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्दर में समता का सागर, बाहर तृष्णा है भारी।
दास बना इन्द्रिय का फिरता, होकर के जो बेकारी।।
भाव सहित हम अर्हतादि की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
चेतन को कुन्दन करने की, विशद भावना भाते हैं।।५।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमगुरु त्रैकालिकतीर्थंकर-चतुर्मंगललोकोत्तमशरण-जिनधर्म-

जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्य: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन ज्ञान सूर्य से रोशन, मोह तिमिर ने घेरा है।
सम्यक् निधि प्रगटाने वाला, पाए विशद उजेरा है।।
भाव सहित हम अर्हतादि की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
चेतन को कुन्दन करने की, विशद भावना भाते हैं।।६।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमगुरु त्रैकालिकतीर्थंकर-चतुर्मंगललोकोत्तमशरण-जिनधर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्य: मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्मय धूप जलाकर चेतन, गृह को हम महकाऐंगे।
कर्म शैल पर चारित को घन, से अब पूर्ण नशाऐंगे।।
भाव सहित हम अर्हतादि की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
चेतन को कुन्दन करने की, विशद भावना भाते हैं।।७।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमगुरु त्रैकालिकतीर्थंकर-चतुर्मंगललोकोत्तमशरण-जिनधर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्य: अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जान के निज की शक्ती को हम, काल अनादी भटकाए।
रत्नत्रय के तरु से शिवफल, काल अनादी से खाए।।
भाव सहित हम अर्हतादि की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
चेतन को कुन्दन करने की, विशद भावना भाते हैं।।८।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमगुरु त्रैकालिकतीर्थंकर-चतुर्मंगललोकोत्तमशरण-जिनधर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्य: मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानानंत आदि गुण पाने, पावन अर्घ्य बनाए हैं।
झुककर के शाष्टांग चरण में, आज चढ़ाने लाए हैं।।
भाव सहित हम अर्हतादि की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
चेतन को कुन्दन करने की, विशद भावना भाते हैं।।९।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमगुरु त्रैकालिकतीर्थंकर-चतुर्मंगललोकोत्तमशरण-जिनधर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्य: अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा—करें याग मण्डल विशद, पावन परम विधान।
परमेष्ठी के पद युगल, करते हैं जयगान।।

(चौपाई)

पंच परमेष्ठी मंगल जानो, उत्तम शरण लोक में मानो।
भूत भविष्यत के जिन स्वामी, वर्तमान के शिवपथ गामी।।१।।
विद्यमान जिन बीस बताए, जो विदेह में शाश्वत गाए।
परम सिद्ध होते अविकारी, पावन अष्ट गुणों के धारी।।२।।
जैनाचार हैं पंचाचारी, तप धर गुप्ति धर्म के धारी।
पच्चिस मूल गुणों को पाते, उपाध्याय ज्ञानी कहलाते।।३।।
साधू रत्नत्रय के धारी, संयमधर होते अनगारी।
सम्यक् तपकर ऋद्धि जगाते, तीन लोक में पूजे जाते।।४।।
मंगलमय जिन धर्म कहाए, जीवों को शिव मार्ग दिखाए।
ॐकार मय श्री जिनवाणी, होती जन जन की कल्याणी।।५।।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य कहाए, चैत्यालय में शोभा पाए।
यज्ञेश्वर पद को हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।६।।
विशद भाव यह रहे हमारे, विघ्न दूर हो जाएँ सारे।
अनुक्रम से सब कर्म नशाएँ, पावन मोक्ष महा पद पाएँ।।७।।
भक्ति मुक्ति का साधन जानो, जैनागम कहता है मानो।
अतः भाव से भक्ति रचाते, जिन पद सादर शीश झुकाते।।८।।

दोहा—परमेष्ठ जिन पाँच हैं, मंगल उत्तम चार।
चार शरण को प्राप्त कर, पाएँ भवदधि पार।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमगुरु-त्रैकालिक-चतुर्मगललोकोत्तमशरण-जिनधर्मजिनागम-जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा—जिनके चरणों में विशद, वन्दन बारम्बार।
यज्ञेश्वर है लोक में, शिव पद के दातार।।

।।इत्याशीर्वादः।।

मण्डल पर पुष्पाञ्जलि

दोहा—मण्डल पर पुष्पाञ्जलि, करें भाव के साथ।
यज्ञेश्वर के पद युगल, विशद झुकाएं माथ।।

(इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

कर्णिका में अर्हंत् की पूजा करना

श्री अर्हंत पूजा

स्थापना

कर्मघातिया नाशी अर्हत्, पावन अनन्त चतुष्टय वान।
धर्म तीर्थ के रहे प्रवर्तक, तीर्थंकर छियालिस गुणवान।।
मुनि गणधर सुरपति नरपति सब, करते हैं जिनका गुणगान।
परम पूज्य अर्हन्तों का हम, भाव सहित करते आह्वान।।
दोहा–महिमा जिन अर्हन्त की, जग में रही महान।
जिनकी अर्चा कर विशद, पाएँ शिव सोपान।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं परंब्रह्मन्अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं परंब्रह्मन्अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री परंब्रह्मन्अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

''द्रव्यार्पण''

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्परमेष्ठिने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्परमेष्ठिने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्परमेष्ठिने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्परमेष्ठिने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्परमेष्ठिने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्परमेष्ठिने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्परमेष्ठिने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्परमेष्ठिने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्परमेष्ठिने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

(मंडल पर पूर्व दिशा में पुष्पांजलि क्षेपण कर सिद्धों की पूजा करना)

श्री सिद्ध पूजा

स्थापना

गुणानन्त के धारी पावन, अष्टकर्म से रहित महान।
लोक शिखर पर अधर विराजे, सिद्ध प्रभू आठों गुणवान।।
सादि अनन्त निकल परमातम, तीन लोक में रहे प्रसिद्ध।
विशद हृदय में आह्वानन हम, करते हैं प्रभु हे जिन सिद्ध।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र-अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

''द्रव्यार्पण''

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने कामवाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।
(दक्षिण दिशा में पुष्पांजलि क्षेपण करके आचार्य परमेष्ठि की पूजा करना)

श्री आचार्य परमेष्ठि पूजा

''स्थापना''

पद आचार्य के धारी होते, पालन करते पञ्चाचार।
छत्तिस मूलगुणों के धारी, परम वीतरागी अनगार।।

मोक्ष मार्ग के राही अनुपम, करते स्व पर का उपकार।
आह्वानन करते हम उर में, विशद भाव से बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्रीमदाचार्यपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीमदाचार्यपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीमदाचार्यपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

''द्रव्यार्पण''

ॐ ह्रीं श्रीमदाचार्यपरमेष्ठिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने कामवाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीमदाचार्य परमेष्ठिने अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः क्षिपेत्

(पश्चिम दिशा में पुष्पांजलि क्षेपण करके उपाध्याय की पूजा करें)

श्री उपाध्याय परमेष्ठि की पूजा

''स्थापना''

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, धारी उपाध्याय गुणवान।
पच्चिस भूल गुणों को पाते, मुनियों को देते सदज्ञान।।
सुर-नर असुर चरण का वन्दन, करके होते भाव विभोर।
उपाध्याय की अर्चा करके, मंगल होवे चारों ओर।।

ॐ ह्रीं श्रीउपाध्यायपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीउपाध्यायपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीउपाध्यायपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

''द्रव्यार्पण''

ॐ ह्रीं श्रीउपाध्यायपरमेष्ठिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने कामवाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफल प्राप्तये विनाशनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्याय परमेष्ठिने अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि० स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलि:।

(उत्तर दिशा में पुष्पांजलि क्षेपण करके सर्वसाधु की पूजा करना)

श्री सर्व साधु पूजा

सम्यक् दर्श ज्ञान चारित तप, के धारी ऋषिवर गुणवान।
ज्ञान ध्यान तप लीन यतीश्वर, करते हैं स्व पर कल्याण।।
विषयाशा के त्यागी साधू, नग्न दिगम्बर हो अविकार।
करते हम आह्वान हृदय में, वन्दन करके बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

''द्रव्यार्पण''

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिने चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिने अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिने पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिने दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिने धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसर्वसाधुपरमेष्ठिने फलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री सर्व साधु परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलि:।

त्रिकाल चौबीसी के अर्घ्य

स्वरवलय के अभ्यन्तर में भूतकालीन तीर्थंकर की पूजा करें।

भूतकालीन तीर्थंकर पूजा

स्थापना

जम्बूद्वीप के दक्षिण दिश में, भरत क्षेत्र है धनुषाकार।
षट् कालों का होय प्रवर्तन, कर्म भूमि है अपरम्पार।।
चतुर्थकाल में हों तीर्थंकर, भूतकाल के जिन चौबीस।
विशद हृदय में आह्वानन कर, चरणों झुका रहे हम शीश।।

ॐ ह्रीं श्रीनिर्वाणसागराद्यतीतकालतीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीनिर्वाणसागरद्यतीतकालतीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीनिर्वाणसागराद्यतीतकालतीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

''द्रव्यार्पण''

ॐ ह्रीं श्रीनिर्वाणसागराद्यतीतकालतीर्थंकरेभ्य: जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीनिर्वाणसागराद्यतीतकालतीर्थंकरेभ्य: चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीनिर्वाणसागराद्यतीतकालतीर्थंकरेभ्य: अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीनिर्वाणसागराद्यतीतकालतीर्थंकरेभ्य: पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीनिर्वाणसागराद्यतीतकालतीर्थंकरेभ्य: नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीनिर्वाणसागराद्यतीतकालतीर्थंकरेभ्य: दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीनिर्वाणसागराद्यतीतकालतीर्थंकरेभ्य: धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीनिर्वाणसागराद्यतीतकालतीर्थंकरेभ्य: फलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीनिर्वाणसागराद्यतीतकालतीर्थंकरेभ्य: अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं नि.स्वाहा।

''पूर्णार्घ्य''

दोहा–भूतकाल में जो हुए, तीर्थंकर चौबीस।
अर्घ्य चढ़ाते जिनचरण, पाने शुभ आशीष।।

ॐ ह्रीं श्री निर्वाण सागराद्यतीतकाल तीर्थंकरेभ्य: पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।
(मंत्र वलय के अभ्यन्तर में वर्तमान कालीन तीर्थंकर की पूजा करें)

वर्तमान कालीन तीर्थंकर पूजा

''स्थापना''

वृषभादिक चौबिस तीर्थंकर, भरत क्षेत्र में महिमा वान।
वर्तमान कालिक जिन का हम, करते भाव सहित गुणगान।।
मोक्ष मार्ग के नेता अनुपम, करनेवाले जग कल्याण।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभाजितादिवर्तमानकालतीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री वृषभाजितादिवर्तमानकालतीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री वृषभाजितादिवर्तमानकालतीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

''द्रव्यार्पण''

ॐ ह्रीं श्री वृषभाजितादिवर्तमानकालतीर्थंकरेभ्य: जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री वृषभाजितादिवर्तमानकालतीर्थंकरेभ्य: चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री वृषभाजितादिवर्तमानकालतीर्थंकरेभ्य: अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री वृषभाजितादिवर्तमानकालतीर्थंकरेभ्य: पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री वृषभाजितादिवर्तमानकालतीर्थंकरेभ्य: नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री वृषभाजितादिवर्तमानकालतीर्थंकरेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री वृषभाजितादिवर्तमानकालतीर्थंकरेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री वृषभाजितादिवर्तमानकालतीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीं वृषभाजितादि वर्तमानकालतीर्थंकरेभ्य अर्घ्यं नि० स्वाहा।

''पूर्णार्घ्य''

दोहा—वर्तमान के जो हुए, तीर्थंकर चौबीस।
अर्घ्य चढ़ाते जिन चरण, पाने शुभ आशीष।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभाजितादि वर्तमानकाल तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।

(ठकारवलय के अभ्यन्तर में भविष्यत्कालीन तीर्थंकर की पूजा करना)

भविष्यकालीन तीर्थंकर पूजा

''स्थापना''

भारत क्षेत्र के आर्य खण्ड में, तीर्थंकर होंगे चौबीस।
कर्म नाश करके जो होंगे, पावन सिद्ध-शिला के ईश।।
करें अनागत के तीर्थंकर, का भी हम पावन गुणगान।
तीन योग से वन्दन करके, करते निज उर में आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री महापद्मसुरदेवादिअनागतकालतीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री महापद्मसुरदेवादिअनागतकालतीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री महापद्मसुरदेवादिअनागतकालतीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

''द्रव्यार्पण''

ॐ ह्रीं श्री महापद्म सुर देवादि अनागत काल तीर्थंकरेभ्यः जलं नि० स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री महापद्म सुर देवादि अनागत काल तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं नि० स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री महापद्म सुर देवादि अनागत काल तीर्थंकरेभ्यः अक्षतं नि० स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री महापद्म सुर देवादि अनागत काल तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं नि० स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री महापद्म सुर देवादि अनागत काल तीर्थंकरेभ्य: नैवेद्यं नि० स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री महापद्म सुर देवादि अनागत काल तीर्थंकरेभ्य: दीपं नि० स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री महापद्म सुर देवादि अनागत काल तीर्थंकरेभ्य: धूपं नि० स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री महापद्म सुर देवादि अनागत काल तीर्थंकरेभ्य: फलं नि० स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री महापद्म सुरदेवादि अनागत कालतीर्थंकरेभ्य: अर्घ्यं नि० स्वाहा।

''पूर्णार्घ्य''

दोहा–भावी कालिक होयेंगे, तीर्थंकर चौबीस।
जिन की अर्चा कर मिले, हमको शुभ आशीश।।

ॐ ह्रीं श्री महापद्म सुर देवादि अनागत कालतीर्थंकरेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

(अब अष्ट कमल के अन्तर्गत चतुर्दिशा के चार दलों में क्रम से पूजा करें)

अर्हंत मंगलादि के चार अर्घ्य

पूर्व दलके अभ्यंतर में–

अर्हत् मंगल रहे लोग में, मंगलकारी जगत प्रधान।
लोकोत्तम त्रिभुवन में गाए, शरणागत के रक्षक मान।।
मंगलकारी जिनकी अर्चा, जो उत्तम पद करे प्रदान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करते हम जिनका गुणगान।।

ॐ ह्रीं ह्रं श्रीं अर्हन्मंगललोकोत्तमशरणेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिशा के दल में–

अष्ट कर्म का नाश करें जो, सिद्ध प्रभू हैं जगत महान।
त्रिभुवन में लोकोत्तम हैं जो, अतिशय कारी महिमावान।।
मंगलकारी जिनकी अर्चा, जो उत्तम पद करे प्रदान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करते हम जिनका गुणगान।।

ॐ ह्रीं ह्रं श्री सिद्ध मंगललोकोत्तमशरणेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिशा में–

विषयाशा के त्यागी साधू, अविकारी जो रहे महान।
रत्नत्रय के धारी पावन, पाने वाले शिव सोपान।।
मंगलकारी जिनकी अर्चा, जो उत्तम पद करे प्रदान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करते हम जिनका गुणगान।।

ॐ ह्रीं हं श्रीं साधुमंगललोकोत्तमशरणेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिशा में–

धर्म केवली कथित मनोहर, करने वाला जग कल्याण।
विशद धर्म के धारी पावें, अतिशयकारी पद निर्वाण।।
मंगलकारी जिनकी अर्चा, जो उत्तम पद करे प्रदान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करते हम जिनका गुणगान।।

ॐ ह्रीं हं श्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्ममंगललोकोत्तमशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अब अष्ट कमल की विदिशा के दलों में स्थापित जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य और चैत्यालय की पूजा करें)

आग्नेय विदिशा के दल में–

श्री जिन धर्म पूजा

''स्थापना''

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरितमय, रत्नत्रय है धर्म प्रधान।
वस्तु स्वभाव धर्म मंगलमय, उत्तमक्षमा आदि गुणवान।।
परम अहिंसामयी धर्म है, जग जीवों का पालन हार।
मोक्ष मार्ग दर्शाने वाला, तीन लोक में मंगलकार।।
दोहा–भरतैरावत क्षेत्र में, चौथे पंचम काल।
एवं रहे विदेह में, शास्वत धर्म त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं हं श्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मक धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं हं श्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मक धर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ:

स्थापनं।

ॐ ह्रीं ह्रं श्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचानचारित्रात्मक धर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

''द्रव्यार्पण''

ॐ ह्रीं ह्रं श्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रात्मकधर्माय जलं नि० स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रं श्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रात्मकधर्माय चंदनं नि० स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रं श्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रात्मकधर्माय अक्षतं नि० स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रं श्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रात्मकधर्माय पुष्पं नि० स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रं श्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रात्मकधर्माय नैवेद्यं नि० स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रं श्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रात्मकधर्माय दीपं नि० स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रं श्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रात्मकधर्माय धूपं नि० स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रं श्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रात्मकधर्माय फलं नि० स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रं श्रीं सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्रात्मक धर्माय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

''पूर्णार्घ्य''

दोहा–जल गंधाक्षत आदि का, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
धारण कर जिन धर्म शुभ, पाएँ सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं ह्रं श्री सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रात्मधर्माय पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।

(शान्तये शांतिधारा/पुष्पांजलि क्षिपेत्।)

नैऋत्यविदिशा के दल में–

जिनागम पूजा

''स्थापना''

दिव्य ध्वनि जिन मुख से खिरती, ॐकार मय महति महान।
गणधर द्वादशांग में गूंथित, जिसको करते अतिशय वान।।
अंग पूर्व संयुक्त कहा है, जैनागम जग मंगलकार।
आह्वानन् करते हम उर में, विशद भाव से बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनागम! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनागम! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीजिनागम! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

''द्रव्यार्पण''

ॐ ह्रीं श्रीजिनागमाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीजिनागमाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीजिनागमाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीजिनागमाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीजिनागमाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीजिनागमाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीजिनागमाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीजिनागमाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीजिनागमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

अर्घ्य बनाते जल गंधादिक, अष्ट द्रव्य का अपरम्पार।
जिनवाणी से ज्ञान प्राप्त कर, मोक्ष मार्ग का पाएँ सार।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनागमाय नमः पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।

(शांतये शांतिधारा/पुष्पांजलि क्षिपेत)

वायव्यविदिशा के दल में पूजा करना–

जिन चैत्य पूजा

''स्थापना''

असंख्यात जिन प्रतिमा शाश्वत्, कृत्रिम भी जिनबिम्ब महान।
ढाई द्वीप में पूज्य मनोहर, सुर-नर वंदित आभावान।।
जिनप्रतिमा के दर्शन करके, मूर्तिमान का होता दर्श।
वीतराग निर्ग्रन्थ दशा को, पाने का जागे उत्कर्ष।।
दोहा–जिन प्रतिमा का दर्श कर, जागे उर श्रद्धान।
अतः हृदय में आज हम, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं हूँ श्रीं जगत्त्रयवर्तिजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं हूँ श्रीं जगत्त्रयवर्तिजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं हूँ श्रीं जगत्त्रयवर्तिजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

''द्रव्यार्पण''

ॐ ह्रीं हूँ श्रीं जगत्त्रयवर्ति जिनबिम्ब समूहाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि० स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने कामवाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफल प्राप्तये विनाशनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं जगत्त्रयवर्ति जिन बिम्ब समूहाय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं नि० स्वाहा। (शान्तये शांतिधारा/पुष्पांजलि क्षिपेत्)

पूर्णार्घ्य

जल गंधादिक अष्ट द्रव्य का, अर्घ्य बनाया अतिशयकार।
भाव सहित हम अर्चा करते, पाने शिव पद का आधार।।

ॐ ह्रीं हूँ श्रीं जगत्त्रयवर्ति जिन बिम्ब समूहाय अनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

(शांतये शांतिधारा/पुष्पांजलिं क्षिपेत)

ईशान विदिशा के दल में पूजा करना–

जिन चैत्यालय पूजा

''स्थापना''

अकृत्रिम जिन मंदिर शाश्वत, कृत्रिम भी शुभकारी।
वीतराग जिन बिम्बों संयुत, सोहें मंगलकारी।।

भवि जीवों को जिनकी अर्चा, अतिशय पुण्य प्रदायी।
आह्वानन् स्थापन पूजन, है जग में शिवदायी।।

ॐ ह्रीं र्हं श्री जगत्त्रयवर्तिजिनचैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं जगत्त्रयवर्तिजिनचैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं जगत्त्रयवर्तिजिनचैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

''द्रव्यार्पण''

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं जगत्त्रयवर्ति जिन चैत्यालयेभ्य: जलं नि० स्वाहा।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं जगत्त्रयवर्ति जिन चैत्यालयेभ्य: चन्दनं नि० स्वाहा।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं जगत्त्रयवर्ति जिन चैत्यालयेभ्य: अक्षतं नि० स्वाहा।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं जगत्त्रयवर्ति जिन चैत्यालयेभ्य: पुष्पं नि० स्वाहा।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं जगत्त्रयवर्ति जिन चैत्यालयेभ्य: नैवेद्यं नि० स्वाहा।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं जगत्त्रयवर्ति जिन चैत्यालयेभ्य: दीपं नि० स्वाहा।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं जगत्त्रयवर्ति जिन चैत्यालयेभ्य: धूपं नि० स्वाहा।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं जगत्त्रयवर्ति जिन चैत्यालयेभ्य: फलं नि० स्वाहा।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं जगत्त्रयवर्ति जिन चैत्यालयेभ्य: अर्घ्यं नि० स्वाहा।

दोहा—जल गंधादिक का लिया, पावन यह शुभ अर्घ्य।
चढ़ा रहे नव देव पद, पाने सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं र्हं श्रीं जगत्त्रयवर्ति जिन चैत्यालेभ्य: अर्घ्यं नि० स्वाहा।

(शांतये शांतिधारा/पुष्पांजलिं क्षिपेत)

(२१ बार अनादि सिद्ध मंत्र की जाप्य करें)

ॐ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं
चत्तारिमंगलं-अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहु मंगलं,
केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-

अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा,
केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंत सरणं पव्वज्जामि,
सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहुसरणं पव्वज्जामि,
केवलि पण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि।
ॐ ह्रौं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

''पूर्णार्घ्य''

अर्हंत मुख्य हैं जिसमें ऐसे, सोलह हैं सब देव महान।
इनकी पूजा विधिवत करते, हो निर्विघ्न पूर्ण अनुष्ठान।।
भवि जीवों को सौख्य प्रदायी, श्री जिन अर्चा है शुभकार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, विशद भाव से बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-भूतवर्तमान-भाविकालीन-चतुर्विंशति-तीर्थंकर-अर्हन्मंगललोकोत्तमशरण-सिद्धमंगललोकोत्तमशरण-साधुमंगललोकोत्तम-शरण-केवलिप्रज्ञप्तधर्म-मंगललोकोत्तमशरण-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्यजिनचैत्या-लयेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति, स्वाहा।

(शांतये शांतिधारा/पुष्पांजलिं क्षिपेत)

''अथः अष्टदल स्थापित जयादि देवतार्चना''

(अब अष्टदल कमल में स्थापित जया आदि आठ देवियों की क्रम से पूजा करना है। इन जयादि देवियों की पूजा के लिए एक थाल में पूजन सामग्री लेकर जिनेन्द्र देव के चरण कमलों में अवतरण विधि करके अपने पास में रख लेवें। इसी सामग्री से देवियों की पूजा करें।

(पुष्पांजलि क्षिपेत)

लोक पूज्य अर्हन्त हैं, जिनके भक्त प्रधान।
जया आदि वसु देवियाँ, आ पावें स्थान।।

(जयादिदेवी पूजा प्रतिज्ञापनाय अष्टदल कमलेषु पुष्पांजलि क्षिपेत)

अथ प्रत्येक पूजा

हे जया देवि! तुम आओ, शुभ यज्ञ भाग यह पाओ।
जिन पूजा यहाँ रचाते, हम उसमें तुम्हें बुलाते।।१।।

ॐ ह्रीं जये देवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्।
ॐ ह्रीं जये देवि! अत्र तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं जये देवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

इन मंत्रों से कमल के प्रथम दल पर पुष्पांजलि क्षेपण करते हुए स्थापना विधि करे। पुनः आगे लिखे मंत्र को बोलकर अर्घ्य समर्पित करें।

ॐ ह्रीं जयायै इदं जलं गंधं अक्षतान पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यता प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

हे ''विजया देवी'' आओ, शुभ यज्ञ भाग यह पाओ।
जिन पूजा यहाँ रचाते, हम उसमें तुम्हें बुलाते।।२।।

ॐ ह्रीं विजया देवि! अत्र आगच्छ-आगच्छ, अत्र तिष्ठ ठः ठः,
अत्र मम सन्निहिता भव-भव वषट्।

ॐ ह्रीं विजया देव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान, पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृहतां प्रतिग्रह्तां स्वाहा।

द्वितीय दल में पुष्पांजलि क्षेपण करें–

हे अजिता देवी आओ, शुभ यज्ञ भाग यह पाओ।
जिन पूजा यहाँ रचाते, हम उसमें तुम्हें बुलाते।।३।।

ॐ ह्रीं अजिता देवि! अत्र आगच्छ-आगच्छ, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव-भव वषट्।

ॐ ह्रीं अजितादेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान, पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृहतां प्रतिग्रह्तां स्वाहा।

देवी 'अपराजिता' आओ, शुभ यज्ञ भाग यह पाओ।
जिन पूजा यहाँ रचाते, हम उसमें तुम्हें बुलाते।।४।।

ॐ ह्रीं अपराजितादेवि! अत्र आगच्छ-आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं अपराजिता देव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान, पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्तां प्रतिग्रह्तां स्वाहा।

हे 'जम्भा' देवी आओ, शुभ यज्ञ भाग यह पाओ।
जिन पूजा यहाँ रजाते, हम उसमें तुम्हें बुलाते।।५।।

ॐ ह्रीं जम्भादेवि! अत्र आगच्छ-आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं जम्भादेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान, पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्तां प्रतिग्रह्तां स्वाहा।

हे 'मोहादेवी' आओ, शुभ यज्ञ-भाग यह पाओ।
जिन पूजा यहाँ रचाते, हम उसमें तुम्हें बुलाते।।६।।

ॐ ह्रीं मोहादेवि! अत्र आगच्छ-आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं मोहादेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान, पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्तां प्रतिग्रह्तां स्वाहा।

हे 'स्तंभा' देवी आओ, शुभ यज्ञ-भाग यह पाओ।
जिन पूजा यहाँ रचाते, हम उसमें तुम्हें बुलाते।।७।।

ॐ ह्रीं स्तंभादेवि! अत्र आगच्छ-आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं स्तंभादेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान, पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्तां प्रतिग्रह्तां स्वाहा।

देवि 'स्तंभिनी' आओ, शुभ यज्ञ-भाग यह पाओ।
जिन पूजा यहाँ रचाते, हम उसमें तुम्हें बुलाते।।८।।

ॐ ह्रीं स्तंभिनीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं स्तंभिनीदेव्यै इदंजलं गंधं अक्षतान, पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृहतां प्रतिग्रहतां स्वाहा।

दोहा–जया आदि हे देवियो, आन करो कल्याण।
यज्ञ भाग पाके करो, हमको आप निहाल।।

ॐ ह्रीं जयाद्यष्टदेवीभ्य: इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा। इति पूर्णार्घ्यं।

इस प्रकार जयादिदेवताओं की अर्चना पूर्ण हुई।

सोलह विद्यादेवताओं की पूजा

(अब सोलह कमलदल पर स्थापित विद्या देवताओं की पूजा करना, यहाँ पर भी पूजन सामग्री के थाल को लेकर भगवान के चरण कमलों में अवतारण विधि करके अपने पास रख लेवें और इसी से देवियों की पूजा करें)

।।अथ पुष्पांजलि:।।

दोहा–हे विद्या देवी! सभी, रोहिणी आदि प्रधान।
करते हैं हम भाव से, आज यहाँ आह्वान।।

(इति रोहिण्यादि विद्या देवता पूजा प्रतिज्ञापनाय षोडशदलेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत।)

अथ प्रत्येक अर्घ्य

चौपाई

यज्ञ में रोहिणी देवी आन, सब विघ्नों का करो निदान।
पाओ यज्ञ भाग शुभकार, करो आप भी धर्म प्रचार।।१।।

ॐ ह्रीं रोहिणीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्।

ॐ ह्रीं रोहिणीदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ:।

ॐ ह्रीं रोहिणीदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं रोहिणीदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यता स्वाहा।

यज्ञ में 'प्रज्ञप्ती' तुम आन, सब विघ्नों का करो निदान।
पाओ यज्ञ भाग शुभकार, करो आप भी धर्म प्रचार।।२।।

ॐ ह्रीं प्रज्ञप्तिदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं प्रज्ञप्तिदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यता स्वाहा।

यज्ञ में ''वज्र शृंखला'' आन, सब विघ्नों का करो निदान।
पाओ यज्ञ भाग शुभकार, करो आप भी धर्म प्रचार।।३।।

ॐ ह्रीं वज्रशृंखलादेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं वज्रशृंखलादेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यता स्वाहा।

यज्ञ में ''वज्रांकुशा'' तुम आन, सब विघ्नों का करो निदान।
पाओ यज्ञ भाग शुभकार, करो आप भी धर्म प्रचार।।४।।

ॐ ह्रीं वज्रांकुशादेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं वज्रांकुशादेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यता स्वाहा।

यज्ञ में 'जांबूनदा' तुम आन, सब विघ्नों का करो निदान।
पाओ यज्ञ भाग शुभकार, करो आप भी धर्म प्रचार।।५।।

ॐ ह्रीं जांबूनदादेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं जांबूनदादेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यता स्वाहा।

यज्ञ में 'पुरुषदत्ता' तुम आन, सब विघ्नों का करो निदान।
पाओ यज्ञ भाग शुभकार, करो आप भी धर्म प्रचार।।६।।

ॐ ह्रीं पुरुषदत्तादेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं पुरुषदत्तादेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं

स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यता स्वाहा।

यज्ञ में ''काली देवी'' तुम आन, सब विघ्नों का करो निदान।
पाओ यज्ञ भाग शुभकार, करो आप भी धर्म प्रचार।।७।।

ॐ ह्रीं कालीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं कालीदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यता स्वाहा।

यज्ञ में ''महाकाली'' तुम आन, सब विघ्नों का करो निदान।
पाओ यज्ञ भाग शुभकार, करो आप भी धर्म प्रचार।।८।।

ॐ ह्रीं महाकालिदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं महाकालीदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यता स्वाहा।

यज्ञ में ''गौरी देवी'' तुम आन, सब विघ्नों का करो निदान।
पाओ यज्ञ भाग शुभकार, करो आप भी धर्म प्रचार।।९।।

ॐ ह्रीं गौरीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं गौरीदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यता स्वाहा।

यज्ञ में ''गांधारी'' तुम आन, सब विघ्नों का करो निदान।
पाओ यज्ञ भाग शुभकार, करो आप भी धर्म प्रचार।।१०।।

ॐ ह्रीं गांधारीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं गांधारीदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यता स्वाहा।

यज्ञ में ''ज्वालामुखी'' तुम आन, सब विघ्नों का करो निदान।
पाओ यज्ञ भाग शुभकार, करो आप भी धर्म प्रचार।।११।।

ॐ ह्रीं ज्वालामालिनीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं ज्वालामालिनीदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यता स्वाहा।

यज्ञ में ''मानवी'' देवी आन, सब विघ्नों का करो निदान।
पाओ यज्ञ भाग शुभकार, करो आप भी धर्म प्रचार।।१२।।

ॐ ह्रीं मानवीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं मानवीदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यता स्वाहा।

यज्ञ में ''वैरोटी'' तुम आन, सब विघ्नों का करो निदान।
पाओ यज्ञ भाग शुभकार, करो आप भी धर्म प्रचार।।१३।।

ॐ ह्रीं वैरोटीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं वैरोटीदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यता स्वाहा।

यज्ञ में ''अच्युता'' देवी आन, सब विघ्नों का करो निदान।
पाओ यज्ञ भाग शुभकार, करो आप भी धर्म प्रचार।।१४।।

ॐ ह्रीं अच्युतादेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं अच्युतादेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यता स्वाहा।

यज्ञ में ''मानसी'' देवी आन, सब विघ्नों का करो निदान।
पाओ यज्ञ भाग शुभकार, करो आप भी धर्म प्रचार।।१५।।

ॐ ह्रीं मानसीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं मानसीदेव्यै इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यता स्वाहा।

यज्ञ में ''महामानसी'' आन, सब विघ्नों का करो निदान।
पाओ यज्ञ भाग शुभकार, करो आप भी धर्म प्रचार।।१६।।

ॐ ह्रीं महामानसीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं महामानसीदेव्यै इदं जलं गंधं...।

दोहा—रोहणी आदिक देवियाँ, हों प्रसन्न सब आज।
यज्ञ भाग पावें यहाँ, करें सफल सब काज।।

ॐ ह्रीं रोहिण्यादिविद्यादेवताभ्यः इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

इति पूर्णार्घ्यं।

इस प्रकार विद्यादिकदेवताओं की अर्चना समाप्त हुई।

अथ चौबीस दलों में स्थापित जिनमाता की पूजन

पुष्पांजलिः

इक्ष्वाकु कुरु उग्र नाथ हरि, वंश पावन यह कहे।
क्षत्रिय राजा चक्रवर्ती, आदि पुण्यार्थी रहे।।
तीर्थंकर की जन्म दात्री, मान्य माताएँ अहा।
जागा है मम सौभाग्य, भक्ती, चरण में मैं कर रहा।।

ॐ जिनमातृसमुदायपूजाप्रतिज्ञापनाय पत्रेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

''अथ प्रत्येक अर्घ्य''

(चाल छन्द)

माँ ऋषभदेव की गाई, जो 'मरुदेवी' कहलाई।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।१।।

ॐ ह्रीं मरुदेवीजिनमातः! अत्र आगच्छ आगच्छ, सवौषट्।

ॐ ह्रीं मरुदेवीजिनमातः! अत्र तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं मरुदेवीजिनमातः! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं मरुदेवीजिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

श्री अजितनाथ की गाई, माँ 'विजयावति' कहाई।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।२।।

ॐ ह्रीं विजयावतीजिनमातः! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं विजयवती जिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि।

श्री सम्भव जिनकी माई, जिनमात सुषेणा पाई।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।३।।

ॐ ह्री सुषेणाजिनमातः! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सुषेणा जिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि।

माँ अभिनन्दन की जानो, 'सिद्धार्था' पावन मानो।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।४।।

ॐ ह्रीं सिद्धार्थाजिनमातः! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सिद्धार्था जिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

माँ सुमतिनाथ की भाई, जो 'मंगलावति' कहलाई।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।५।।

ॐ ह्रीं मंगलाजिनमातः। अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं मंगलाजिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

श्री पदमप्रभु की भाई, जिन मात 'सुसीमा' गाई।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।६।।

ॐ ह्रीं सुषीमाजिनमातः! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सुषीमाजिनमात्रे जलादि अर्घ्य समर्पयामि स्वाहा।

जिनवर सुपार्श्व कहलाए, मा 'पृथ्वीषेणा' पाए।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।७।।

ॐ ह्रीं पृथ्वीषेणाजिनमातः! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं पृथ्वीषेणाजिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभु की जानो, 'लक्ष्मणा' माता है मानो।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।८।।

ॐ ह्रीं लक्ष्मणाजिनमात:! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं लक्ष्मणाजिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

श्री पुष्पदन्त की भाई, 'जयरामा' माता गाई।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।९।।

ॐ ह्रीं जयरामाजिनमात:! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ:, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं जयरामाजिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

श्री शीतलनाथ की भाई, जिन मात 'सुनन्दा' गाई।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।१०।।

ॐ ह्रीं सुनन्दाजिनमात:! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ:, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सुनन्दाजिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

जिन श्रेयनाथ कहलाए, माँ 'विष्णु श्री' जो पाए।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।११।।

ॐ ह्रीं विष्णुश्रीजिनमात:! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ:, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं विष्णुश्रीजिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

श्री वासुपूज्य की भाई, माँ 'जयावती' कहलाई।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।१२।।

ॐ ह्रीं जयावतीजिनमात:! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं जयावतीजिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

श्री विमलनाथ जी गाए, माँ 'जयश्यामा' जो पाए।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।१३।।

ॐ ह्रीं जयश्यामाजिनमातः! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं जयश्यामाजिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

जिनवर अनन्त कहलाए, जिनमात 'सुव्रता' पाए।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।१४।।

ॐ ह्रीं सुव्रताजिनमातः! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सुव्रताजिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

श्री धर्मनाथ कहलाए, 'सुप्रभा' मात जो पाए।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।१५।।

ॐ ह्रीं सुप्रभाजिनमातः! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सुप्रभाजिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

जिन शान्तिनाथ कहलाए, माँ 'ऐरादेवी' पाए।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।१६।।

ॐ ह्रीं ऐरावतीजिनमातः! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं ऐरावतीजिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

श्री कुन्थुनाथ की भाई, जिन मात 'सुमित्रा' गाई।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।१७।।

ॐ ह्रीं सुमित्राजिनमातः! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सुमित्राजिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

जिन अरहनाथ कहलाए, माँ 'प्रभावती' जो पाए।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।१८।।

ॐ ह्रीं प्रभावतीजिनमातः! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं प्रभावतीजिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ जग जानी, की 'वप्रावति' माँ मानी।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।१९।।

ॐ ह्रीं वप्रावतिजिनमात:! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ:, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं वप्रावतिजिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

जिन मुनिसुव्रत कहलाए, 'पद्मावति' माँ के जाए।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।२०।।

ॐ ह्रीं पद्मावतिजिनमात:! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ:, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं पद्मावतिजिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

श्री नमि जिनवर जी गाए, जो मात 'विनीता' पाए।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।२१।।

ॐ ह्रीं विनीताजिनमात:! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ:, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं विनीताजिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

श्री नेमि नाथ की भाई, माँ 'शिवा देवी' कहलाई।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।२२।।

ॐ ह्रीं शिवादेवीजिनमात:! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ:, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं शिवादेवीजिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ शिवगामी, 'वामा माँ' जिनकी नामी।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।२३।।

ॐ ह्रीं वामादेवीजिनमात:! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ:, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं देवदत्ताजिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

श्री महावीर कहलाए, माँ 'त्रिशला' देवी पाए।
हम जिन पद शीश झुकाते, माँ की महिमा को गाते।।२४।।

ॐ ह्रीं प्रियकारिणीजिनमात:! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ:, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं प्रियकारिणीजिनमात्रे जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

दोहा—जिन माँ का हमने किया, भाव सहित गुणगान।
अर्चा का फल प्राप्त हो, हमको पद निर्वाण।।२५।।

ॐ ह्रीं मरुदेवीप्रभृतिप्रियकारिणीपर्यंतजिनमातृभ्यः पूर्णार्घ्यं समर्पयामि।

•

अथ बत्तीस दलों में स्थापित बत्तीस इन्द्र पूजा

अथ पुष्पांजलिः

दोहा—जिन भक्ती करते विशद, चतुर्णिकाय के देव।
आवके निज स्थान से, करें चरण की सेव।।

ॐ द्वात्रिंशदिन्दपूजाप्रतिज्ञापनाय पत्रेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

दोहा—सप्त कोटि से भी अधिक, लाख बहत्तर धाम।
भवनवासि सुर के रहे, जिनपद विशद प्रणाम।।

भवनेन्द्र समुदाय पूजा विधानाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ प्रत्येक पूजा

(सखी छन्द)

'असुरेन्द्र' शरण में आवे, परिवार साथ में लावे।
जिन पूजा पाठ रचावे, जिनवर की महिमा गावे।।१।।

ॐ ह्रीं असुरेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्।

ॐ ह्रीं असुरेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं असुरेन्द्र! अत्र मम तिष्ठ सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं असुरेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभाग च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'नागेन्द्र' भवन से आवे, परिवार साथ में लावे।
जिन पूजा पाठ रचावे, जिनवर की महिमा गावे।।२।।

ॐ ह्रीं नागेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं नागेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभाग च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'सुपर्णेन्द्र' भवन से आवे, परिवार साथ में लावे।
जिन पूजा पाठ रचावे, जिनवर की महिमा गावे।।३।।

ॐ ह्रीं सुपर्णेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सुपर्णेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभाग च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'दीपेन्द्र' भवन से आवे, परिवार साथ में लावे।
जिन पूजा पाठ रचावे, जिनवर की महिमा गावें।।४।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभाग च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

सुर 'उदधिकुमार' भी आवे, परिवार साथ में लावे।
जिन पूजा पाठ रचावे, जिनवर की महिमा गावें।।५।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभाग च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'स्तनितेन्द्र' यज्ञ में आवे, परिवार साथ में लावे।
जिन पूजा पाठ रचावे, जिनवर की महिमा गावे।।६।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभाग च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'विद्युतेन्द्र' भवन से आवे, परिवार साथ में लावे।
जिन पूजा पाठ रचावे, जिनवर की महिमा गावे।।७।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः,

अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्री विद्युतेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभाग च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'दिक्कुमार' यज्ञ में आवे, परिवार साथ में लावे।
जिन पूजा पाठ रचावे, जिनवर की महिमा गावे।।८।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभाग च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'अग्नीन्द्र' भवन से आवे, परिवार साथ में लावे।
जिन पूजा पाठ रचावे, जिनवर की महिमा गावे।।९।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभाग च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'वातकुमार' इन्द्र भी आवे, परिवार साथ में लावे।
जिन पूजा पाठ रचावे, जिनवर की महिमा गावे।।१०।।

ॐ ह्रीं वातकुमारेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं वातकुमारेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभाग च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

दश भवन वासि के जानो, भवनों से आवें मानो।
जिन पूजा पाठ रचावें, जिनवर की महिमा गावें।।११।।

ॐ ह्रीं असुरेन्द्रादिदशभावनेन्द्रेभ्यः इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

इति पूर्णार्घ्यं।

।।इति भावनेन्द्रार्चनं।।

अथ व्यन्तरेन्द्रार्चनं

व्यन्तर देवों के भवन, संख्यातीत महान।
आठ इन्द्र इनके प्रमुख, करें प्रभू गुणगान।।१।।

व्यन्तरेन्द्रसमुदायपूजाविधिप्रतिज्ञापनाय पत्रेषु पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

सुर 'किन्नरेन्द्र' जो आवे, परिवार साथ में लावे।
जिन पूजा पाठ रचावे, जिनवर की महिमा गावे।।१।।

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्।

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'किंपुरुषेन्द्र' यहाँ पर आवे, परिवार साथ में लावे।
जिन पूजा पाठ रचावे, जिनवर की महिमा गावे।।२।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं किंपुरुषेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

सुर 'महोरगेन्द्र' भी आवे, परिवार साथ में लावे।
जिन पूजा पाठ रचावे, जिनवर की महिमा गावे।।३।।

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः,अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

सुर 'गन्धर्वेन्द्र' जो आवे, परिवार साथ में लावे।

जिन पूजा पाठ रचावे, जिनवर की महिमा गावे।।४।।

ॐ ह्रीं गंधर्वेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं गंधर्वेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'यक्षेन्द्र' यज्ञ में आवे, परिवार साथ में लावे।
जिन पूजा पाठ रचावे, जिनवर की महिमा गावे।।५।।

ॐ ह्रीं यक्षेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं यक्षेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'राक्षसेन्द्र' भक्ति वश आवे, परिवार साथ में लावे।
जिन पूजा पाठ रचावे, जिनवर की महिमा गावे।।६।।

ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'भूतेन्द्र' यज्ञ में आवे, परिवार साथ में लावे।
जिन पूजा पाठ रचावे, जिनवर की महिमा गावे।।७।।

ॐ ह्रीं भूतेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं भूतेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

सुर 'पिशाचेन्द्र' भी आवे, परिवार साथ में लावे।
जिन पूजा पाठ रचावे, जिनवर की महिमा गावे।।८।।

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'व्यन्तरेन्द्र' अष्ट सब आवें, परिवार साथ में लावें।
जिन पूजा पाठ रचावें, जिनवर की महिमा गावें।।९।।

ॐ ह्रीं अष्टविधव्यन्तरेन्द्रेभ्यः इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

इस प्रकार व्यन्तरेन्द्र पूजा समाप्त हुई।

अथ ज्योतिषेन्द्र पूजा

हैं विमान ज्योतिष्क के, अतिशय संख्यातीत।
वाद्य बजाकर भक्ति से, गाएँ भक्ति गीत।।

ॐ ज्योतिषेन्द्रपूजाप्रतिज्ञापनाय पत्रेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

(चौपाई छन्द)

'सोम इन्द्र' ज्योतिष्क कहाए, निज परिवार साथ में लाए।
श्री जिनेन्द्र पद पूज रचाए, भक्ति भाव से महिमा गाए।।

ॐ ह्रीं सोमेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्।

ॐ ह्रीं सोमेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं सोमेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सोमेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'सूर्य इन्द्र' हैं ज्योतिष वासी, ढाई द्वीप के रहे प्रकाशी।
श्री जिनेन्द्र पद पूज रचाए, भक्ति भाव से महिमा गाए।।२।।

ॐ ह्रीं सूर्येन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः,अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सूर्येन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं

स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'इन्द्र चन्द्र' ज्योतिष का जानो, है प्रतीन्द्र रवि ऐसा मानो।
श्री जिनेन्द्र पद पूज रचाए, भक्ति भाव से महिमा गाए।।३।।

ॐ ह्रीं चन्द्रेन्द्र! अत्र आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितों भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं चन्द्रेयाय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञमागं च भजामो, प्रतिगृह्यता स्वाहा।

ज्योतिष बासी देव कहाए, पाँच भेद जिसके बतलाए।
इन्द्र प्रतीन्द्र चन्द्ररवि गाए, श्री जिनेन्द्र पद पूज रचाए।।४।।

ॐ ह्रीं सपरिवारज्योतिषेन्द्रेभ्यः इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

अथ द्वादश कल्पेन्द्र की पूजा

दोहा—वैमानिक के इन्द्र हैं, द्वादश होवें ज्ञात।
श्री जिन की अर्चा करें, है जग में विख्यात।।

ॐ कल्पेन्द्र समुदाय पूजा प्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलि क्षिपेत्।

(चाल छन्द)

'सौधर्मेन्द्र' यज्ञ में आवे, निज परिवार साथ में लावे।
श्री जिनेन्द्र पद पूज रचावे, विशद भाव से महिमा गावे।।१।।

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्।

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'ईशानेन्द्र' यज्ञ में आवे, निज परिवार साथ में लावे।
श्री जिनेन्द्र पद पूज रचावे, विशदभाव से महिमा गावे।।२।।

ॐ ह्रीं ईशानेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं ईशानेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'सानत इन्द्र' यज्ञ में आवे, निज परिवार साथ में लावे।
श्री जिनेन्द्र पद पूज रचावे, विशदभाव से महिमा गावे।।३।।

ॐ ह्रीं सनत्कुमारेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सनत्कुमारेन्द्राय इदं जलं गंद्यं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'माहेन्द्र' यहाँ यज्ञ में आवे, निज परिवार साथ में लावे।
श्री जिनेन्द्र पद पूज रचावे, विशदभाव से महिमा गावे।।४।।

ॐ ह्रीं माहेन्द्र! अत्र आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं माहेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'ब्रह्मेन्द्र' भी प्रभु पद में आवे, निज परिवार साथ में लावे।
श्री जिनेन्द्र पद पूज रचावें, विशदभाव से महिमा गावे।।५।।

ॐ ह्रीं ब्रहमेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'लान्तवेन्द्र' पूजा को आवे, निज परिवार साथ में लावे।
श्री जिनेन्द्र पद पूज रचावें, विशदभाव से महिमा गावे।।६।।

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र

मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'शुक्र इन्द्र' जिनयज्ञ में आवे, निज परिवार साथ में लावे।
श्री जिनेन्द्र पद पूज रचावे, विशदभाव से महिमा गावे।।७।।

ॐ ह्रीं शुकेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'शतारेन्द्र' जिन पद में आवे, निज परिवार साथ में लावे।
श्री जिनेन्द्र पद पूज रचावे, विशदभाव से महिमा गावे।।८।।

ॐ ह्रीं शतारेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं शतारेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'आनतेन्द्र' जिन यज्ञ में आवे, निज परिवार साथ में लावे।
श्री जिनेन्द्र पद पूज रचावें, विशदभाव से महिमा गावे।।९।।

ॐ ह्रीं आनतेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं आनतेन्द्र! इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'प्राणतेन्द्र' जिन यज्ञ में आवे, निज परिवार साथ में लावे।
श्री जिनेन्द्र पद पूज रचावे, विशदभाव से महिमा गावे।।१०।।

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'आरणेन्द्र' जिन यज्ञ में आवे, निज परिवार साथ में लावे।
श्री जिनेन्द्र पद पूज रचावे, विशदभाव से महिमा गावे।।११।।

ॐ ह्रीं आरणेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं आरणेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'अच्युतेन्द्र' जिन यज्ञ में आवे, निज परिवार साथ में लावे।
श्री जिनेन्द्र पद पूज रचावे, विशदभाव से महिमा गावे।।१२।।

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्राय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

स्वर्ग सुखों में मग्न सब, रहें सदा ही देव।
सुर भवनों के जिन भवन, पूजें इन्द्र सदैव।।

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशदिन्द्रा; इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

इस प्रकार बत्तीस इन्द्रों की पूजा पूर्ण हुई।

चतुष्कोंण मंडल में स्थापित पंचदशतिथि देवता पूजा

(यागमंडल में छह वलय के छह कमलों की रचना के बाद पाँच चौकोन मंडल बनाये हैं, उनमें से प्रथम चौकोन मंडल में पंद्रह तिथिदेवताओं के अर्घ्य चढ़ावें।)

पुष्पांजलि:

यक्ष वैश्वानर राक्षस नधृत, पन्नग असुर और सुकुमार।
पिता विश्वमाली चमरेश्वर, वैरोचन महाविध मनहार।।

मार विश्वेश्वर पिंडाशिन् ये, तिथि देव कहलाए प्रधान।
शुभ गुण गाएँ भक्ति भाव से, श्री जिन का करते गुणगान।।

ॐ ह्रीं पंचदशतिथिदेवाय इदं पूर्णार्घ्यं यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

अथ द्वितीय चतुष्कोंण मंडल में स्थापित नवग्रह पूजा

रवि मंगल ग्रह लाल रंग के, बुध गुरु शुक्र पीत रंग जान।
शशि ग्रह धवल राहु केतू का, काला रंग कहे भगवान।।
जिन भक्ती में लीन रहे ये, ग्रहारिष्ट बन करके दूर।
जिन भक्तों को सुख शांती यश, से करते हैं जो भरपूर।।

ॐ नवग्रह समुदायपूजाप्रतिज्ञापनाय चतुष्कोणमंडलस्योपरि पुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

(अब प्रत्येक पूजा की प्रतिज्ञा करने के लिये आह्वानन आदि पूर्वक द्वितीय चतुष्कोण मंडल में उन्हीं-उन्हीं वर्णों के अक्षत के पुंज स्थापित कर उन पुंजों के ऊपर सूर्य आदिकों के लिये क्रम से कुंकुंम आदि से सहित दर्भासन स्थापित करें।)

पूर्व दिशा में– (चाल छन्द)

हैं रविग्रह दोष निवारी, श्री 'पद्मप्रभ' अविकारी।
हम जिन महिमा को गाए, पद सादर शीश झुकाएँ।।

ॐ ह्रीं आदित्य! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्।

ॐ ह्रीं आदित्य! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं आदित्य! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

आदित्याय स्वाहा। आदित्यपरिजनाय स्वाहा। आदित्यानुचराय स्वाहा। आदित्यमहत्तराय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अनिलाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। ॐ स्वाहा। भूः स्वाहा। भुवः स्वाहा। स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा।

ॐ आदित्याय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं, पाद्यं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, चरुं, द्वीपं, धूपं, चरुं,बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां

प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

आग्नेय दिशा में–

शशि ग्रह के दोष निवारी, हैं 'चन्द्रप्रभु' त्रिपुरारी।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।२।।

ॐ ह्रीं सोम! अत्र आगच्छ-आगच्छ...।

ॐ सोमाय स्वाहा। सोमपरिजनाय स्वाहा। सोमानुचराय स्वाहा। सोममहत्तराय स्वाहा...।

ॐ सोमाय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, चरुं, द्वीपं, धूपं, चरुं,बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

दक्षिण दिशा में–

ग्रह भौम के रहे निवारी, श्री 'वासुपूज्य' अविकारी।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।३।।

ॐ ह्रीं कुज! अत्र आगच्छ-आगच्छ...।

ॐ कुजाय स्वाहा। कुजपरिजनाय स्वाहा। कुजानुचराय स्वाहा। कुजमहत्तराय स्वाहा....।

ॐ कुजाय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, चरुं, द्वीपं, धूपं, चरुं,बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

नैऋत्य दिशा में–

ग्रह बुध के दोष निवारी, जिन 'शांतिनाथ' त्रिपुरारी।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।४।।

ॐ ह्रीं बुध! अत्र आगच्छ आगच्छ...।

ॐ बुधाय स्वाहा। बुधपरिजनाय स्वाहा। बुधानुचराय स्वाहा। बुधमहत्तराय स्वाहा...।

ॐ बुधाय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, चरुं, द्वीपं, धूपं, चरुं,बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

पश्चिम दिशा में–

गुरु ग्रह का दोष नशाएँ, श्री आदिनाथ कहलाएँ।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।५।।

ॐ ह्रीं गुरो! अत्र आगच्छ आगच्छ...।

ॐ गुरवे स्वाहा। गुरु परिजनाय स्वाहा। गुरु अनुचराय स्वाहा। गुरु महत्तराय स्वाहा...।

ॐ गुरवे स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, चरुं, द्वीपं, धूपं, चरुं,बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

वायव्य दिशा में–

ग्रह शुक्र के रहे निवारी, जिन पुष्पदन्त अविकारी।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।६।।

ॐ ह्रीं शुक्र! अत्र आगच्छ आगच्छ...।

ॐ शुक्राय स्वाहा। शुक्रपरिजनाय स्वाहा। शुक्रानुचराय स्वाहा। शुक्रमहत्तराय स्वाहा...।

ॐ शुक्राय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, चरुं, द्वीपं, धूपं, चरुं,बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

उत्तर दिशा में–

शनि ग्रह के दोष निवारी, श्री मुनिसुव्रत त्रिपुरारी।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।७।।

ॐ ह्रीं शनैश्चर! अत्र आगच्छ आगच्छ...।

ॐ शनैश्चराय स्वाहा। शनैश्चरपरिजनाय स्वाहा। शनैश्चरानुचराय स्वाहा। शनैश्चरमहत्तराय स्वाहा...।

ॐ शनैश्चराय स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं,

चरुं, द्वीपं, धूपं, चरुं,बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

ईशान दिशा में–

ग्रह राहु दोष निवारी, हैं नेमिनाथ अविकारी।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।८।।

ॐ ह्रीं राहो! अत्र आगच्छ आगच्छ...।

ॐ राहवे स्वाहा। राहुपरिजनाय स्वाहा। राहुअनुचराय स्वाहा। राहुमहत्तराय स्वाहा...।

ॐ राहवे स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, चरुं, द्वीपं, धूपं, चरुं,बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

ऊर्ध्व दिशा में–

ग्रह केतू के विनिवारी, श्री पार्श्वनाथ त्रिपुरारी।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।९।।

ॐ ह्रीं केतो! अत्र आगच्छ आगच्छ...।

ॐ केवते स्वाहा। केतुपरिजनाय स्वाहा। केतुअनुचराय स्वाहा। केतुमहत्तराय स्वाहा...।

ॐ केतवे स्वगणपरिवृताय इदमर्घ्यं पाद्यं, गंधं, अक्षतान्, पुष्पं, चरुं, द्वीपं, धूपं, चरुं,बलिं, फलं, स्वस्तिकं, यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

यहाँ पर जलहोम करने का विधान है। जल होम के पूर्व की सारी विधि करके जौ, तिल और शालि इन तीन धान्यों को मिलाकर आगे के नवग्रह के एक-एक मंत्रों से जलकुंभ में सात-सात बार आहुति देवें।

''दोहा''

यज्ञ भाग हम दे रहे, निज-निज रुचि अनुसार।
ग्रहारिष्ट विनिवारिए, करिए यह उपकार।।१०।।

एक-एक ग्रहों के आहुति मंत्र–

ॐ ह्रीं आदित्य महाग्रह! अमुकस्य– शिवं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं सोमग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं मंगलमहाग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं बुधमहाग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं गुरुमहाग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं शुक्रमहाग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं शनैश्चरमहाग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं राहुमहाग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं केतुमहाग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।

एक-एक ग्रहों के आहुति मंत्र-

ॐ ह्रीं आदित्य महाग्रह! अमुकस्य– शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं सोममहाग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं मंगलमहाग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं बुधमहाग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ गुरुमहाग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं शुक्रमहाग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं शनैश्चरमहाग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं राहुमहाग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं केतुमहाग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।

अनंतर नवग्रह के नवकुंड बनाकर अग्निहवन की पूर्णविधि करके पुन: नवग्रहों के मंत्रों से आगे कही गई उन्हीं-उन्हीं समिधा से एक-एक ग्रहों के एक-एक मंत्र पढ़कर आहुति देवें। सूर्यग्रह के कुंड में आक की समिधा, सोमग्रह के कुंड में पलास-ढाक की समिधा, मंगलग्रह कुंड में खैर की, बुधग्रह के कुंड में चिरचिर (चिरचिटा), गुरु ग्रह के कुंड में पीपल की, शुक्र ग्रह के कुंड में गूलर की, शनिग्रह कुंड में शमी-सफेद कीकर की, राहुग्रह कुंड में दूब से और केतुग्रह कुंड में डाभ से आहुति देवें।

दोहा–नवग्रह अग्नी कुण्ड में, समिधा अग्नि कपूर।
स्थापित करके हवन, करें भाव भरपूर।।

नवग्रहों के अग्निकुंडों में पृथक्-पृथक् आहूति के मंत्र-

ॐ ह्रीं ह्र: आदित्यमहाग्रह!अमुकस्य – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्र: सोमग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं ह्रः मंगलमहाग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रः बुधमहाग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रः गुरुमहाग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रः शुक्रमहाग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रः शनैश्चरमहाग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रः राहुमहाग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रः केतुमहाग्रह! – शिवं कुरु कुरु स्वाहा।

दोहा–नवग्रह देवों की यहाँ, पूजा विधि के हेतु।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, पाने शिव का सेतु।।

ॐ ह्रीं आदित्यादिनवग्रहदेवेभ्यः इदं पूर्णार्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

''अथ तृतीय चतुष्कोंण मंडल में स्थापित चौबीस यक्षों की पूजा''

दोहा

चौबिस जिनवर के रहे, चौबिस यक्ष प्रधान।
जिन पूजा विधि यज्ञ में, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं गोमुखादि चतुर्विंशति यक्ष समुदाय पूजा विधान प्रतिज्ञापनाय तृतीयमंडले पुष्पांजिंल क्षिपेत्।

गोमुख महा यक्ष है त्रिमुख, यक्षेश्वर तुंबरव पुष्पमाल।
मातंग श्याम अजित ब्रह्मनाम है, ईश्वर कुमार षण्मुख पाताल।।
किन्नर गरुण गन्धर्व श्वेन्द्र अरु, धनद वरुण भृकुटी गोमेध।
धरणेन्द्र अरु मातंग यक्ष यह, चौबिस जिन के रहे विशेष।।
सोरठा–आओ शासन देव, महा कल्पतरु यज्ञ में।
बनो सहाय सदैव, यज्ञ भाग पाओ 'विशद'।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरशासनदेवगोमुखप्रमुखसर्वयक्षेभ्यः इदं जलं

गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं अर्घ्यं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा।

अब चौथे चतुष्कोंण मंडप में स्थापित चौबीस यक्षिणी की पूजा

''दोहा''

चौबीसों तीर्थेश की, यक्षणियाँ चौबीस।
श्री जिन की अर्चा करें, पावें नित आशीष।।

ॐ ह्रीं चक्रेश्वर्यादिचतुर्विंशतिशासनदेवतासमुदायपूजाविधिप्रतिज्ञापनाय पुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

''चौबीस यक्षिणी के अर्घ्य''

चक्रेश्वरी अजिता प्रज्ञप्ती, वज्र श्रृंखला पुरुषदत्तिका जान।
मोहिनी मानवी ज्वालामालिनी, भृकुटी चामुण्डी पहिचान।।
गोमेध विद्युन्मालिनी विद्या, विजृंभिणी परभृता कन्दर्प।
गांधारिणी काली अपराजिता सुगन्धिनी कुसुमसुमालिनी सर्व।।
कुष्मांडिनीपद्मावति एवं, सिद्धायिनी ये रहीं प्रधान।
महायज्ञ में सर्व यक्षिणी, यज्ञ भाग शुभ पावें आन।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरशासनदेवीचक्रेश्वरीप्रमुखसर्वयक्षीभ्यः इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

इस प्रकार यक्षिणियों की पूजा पूर्ण हुई।

अथ पंचम चतुष्कोंण मंडल में स्थापित आठ दिक्कन्याओं की पूजा

''दोहा''

यज्ञ भाग पावें स्वयं, दिक्कन्याएँ आन।
अर्चा कर तीर्थेश की, पावें पुण्य निधान।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिदेवीसमुदायपूजाप्रतिज्ञापनाय पंचममंडलेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

(चाल छन्द)

'श्रीदेवी' यज्ञ में आए, रक्षा कर विघ्न नशाए।
श्री जिनवर के गुण गाए, अतिशय महिमा दर्शाए।।१।।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते श्रीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

'ह्री देवी' यज्ञ में आए, रक्षा कर विघ्न नशाए।
श्री जिनवर के गुण गाए, अतिशय महिमा दर्शाए।।२।।

ॐ ह्रीं रक्तवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते ह्रीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ...। इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

'धृति देवी' यज्ञ में आए, रक्षा कर विघ्न नशाए।
श्री जिनवर के गुण गाए, अतिशय महिमा दर्शाए।।३।।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखलशहस्ते धृतिदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ...। इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

'कीर्ति देवी' कीर्ति फैलाए, रक्षा कर विघ्न नशाए।
श्री जिनवर के गुण गाए, अतिशय महिमा दर्शाए।।४।।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते कीर्तिदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ...। इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

'बुद्धी देवी' यहाँ पे आए, रक्षा कर विघ्न नशाए।
श्री जिनवर के गुण गाए, अतिशय महिमा दर्शाए।।५।।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते बुद्धिदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ...। इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

'लक्ष्मी देवी' यहाँ पे आए, लक्ष्मी का लाभ कराए।
श्री जिनवर के गुण गाए, अतिशय महिमा दर्शाए।।६।।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते लक्ष्मीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ...। इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

'शांती देवी' यहाँ पे आए, रक्षा कर विघ्न नशाए।
श्री जिनवर के गुण गाए, अतिशय महिमा दर्शाए।।७।।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते शान्तिदेवि! अत्र आगच्छ

आगच्छ...। इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

'पुष्टी देवी' यहाँ पे आए, रक्षा कर विघ्न नशाए।
श्री जिनवर के गुण गाए, अतिशय महिमा दर्शाए।।८।।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्पमुखकलशहस्ते पुष्टिदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ... इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

आठों दिक्कन्या आएँ, रक्षा कर विघ्न नशाएँ।
श्री जिनवर के गुण गाएं, अतिशय महिमा दर्शाएं।।९।।

ॐ ह्रीं श्र्यादिअष्टदिक्कन्याभ्य: इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

इस प्रकार दिक्कन्याओं की पूजा पूर्ण हुई।

''दश दिक्पाल पूजा''

(अब उसी मंडल पर दशदिक्पालों की पूजा करना है।)

दश दिक्पालों का यहाँ, करते हम आह्वान।
निज-निज दिश के दोष का, कीजे आप निदान।।

ॐ दिक्पालसमुदायपूजाविधिप्रतिज्ञापनाय पंचमंडले पुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

'आदित्य इन्द्र' तुम आओ, इस यज्ञ के विघ्न नशाओ।
यह यज्ञ भाग तुम पाओ, जिन महिमा को दर्शाओ।।१।।

ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ:। ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ इन्द्राय स्वाहा। इन्द्राय इदमर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'अग्नीन्द्र' यहाँ पर आओ, इस यज्ञ के विघ्न नशाओ।
यह यज्ञ भाग तुम पाओ, जिन महिमा को दर्शाओ।।२।।

ॐ ह्रीं अग्ने! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ:। ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ अग्नये स्वाहा। अग्नये इदमर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'यम इन्द्र' यहाँ पर आओ, इस यज्ञ को सफल बनाओ।
यह यज्ञ भाग तुम पाओ, जिन महिमा को दर्शाओ।।३।।

ॐ ह्रीं यम! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ यमाह स्वाहा। यमाय इदमर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

'नैऋत्य इन्द्र' तुम आओ, इस यज्ञ को सफल बनाओ।
यह यज्ञ भाग तुम पाओ, जिन महिमा को दर्शाओ।।४।।

ॐ ह्रीं नैऋत्य! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ नैऋत्याय स्वाहा। नैऋत्याय इदमर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

हे 'वरुण इन्द्र!' तुम आओ, इस यज्ञ को सफल बनाओ।
यह यज्ञ भाग तुम पाओ, जिन महिमा को दर्शाओ।।५।।

ॐ ह्रीं वरुण! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ वरुणाय स्वाहा। वरुणाय इदमर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

हे 'पवन इन्द्र!' तुम आओ, इस यज्ञ को सफल बनाओ।
यह यज्ञ भाग तुम पाओ, जिन महिमा को दर्शाओ।।६।।

ॐ ह्रीं पवन! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ पवनाय स्वाहा। पवनाय इदमर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

हे 'इन्द्र कुबेर!' तुम आओ, इस यज्ञ को सफल बनाओ।
यह यज्ञ भाग तुम पाओ, जिन महिमा को दर्शाओ।।७।।

ॐ ह्रीं कुबेर! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ कुबेराय स्वाहा। कुबेराय इदमर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां

स्वाहा।

हे 'इन्द्र ईशान!' तुम आओ, इस यज्ञ को सफल बनाओ।
यह यज्ञ भाग तुम पाओ, जिन महिमा को दर्शाओ।।८।।

ॐ ह्रीं ईशान! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ईशानाय स्वाहा। ईशानाय इदमर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

हे 'धरणेन्द्र!' यज्ञ में आओ, इस यज्ञ को सफल बनाओ।
यह यज्ञ भाग तुम पाओ, जिन महिमा को दर्शाओ।।९।।

ॐ ह्रीं धरणेन्द्र! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ॐ ह्रीं इंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ धरणेन्द्राय स्वाहा। धरणेन्द्राय इदमर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

हे 'सोम! इन्द्र' तुम आओ, इस यज्ञ को सफल बनाओ।
यह यज्ञ भाग तुम पाओ, जिन महिमा को दर्शाओ।।१०।।

ॐ सोमाय स्वाहा। सोमाय इदमर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

दोहा

दिक्पालों को पूजकर, आहुति करें विशेष।
सप्त धान्य का होम कर, पूजें सर्व जिनेश।।

ॐ ह्रीं इन्द्रादि शत दिक्पालेभ्यः इदं पूर्णार्घ्यं यजामहे प्रतिगृहतां-प्रतिगृहतां स्वाहा।

(आगे जौ, गेहूँ, मूँग, चना, तुवर, शाली और उड़द इन सात धान्यों की एक-एक दिक्पाल के मंत्र सात-सात बार पढ़ते हुये जलकुंभ में आहुति देवें। यह जल होम है।)

(यहाँ ''जलहोमविधि'' से होम करना है।)

दोहा–दिग्पालों को पूजकर, सप्त धान्य से आज।
आहुति करता है यहाँ, मिलकर सकल समाज।।

आहुति के मंत्र–

ॐ आँ क्रों ह्रीं इन्द्राय स्वाहा। (७ बार)

ॐ आँ क्रों ह्रीं अग्नये स्वाहा। (७ बार)
ॐ आँ क्रों ह्रीं यमाय स्वाहा। (७ बार)
ॐ आँ क्रों ह्रीं नैऋत्याय स्वाहा। (७ बार)
ॐ आँ क्रों ह्रीं वरुणाय स्वाहा। (७ बार)
ॐ आँ क्रों ह्रीं पवनाय स्वाहा। (७ बार)
ॐ आँ क्रों ह्रीं कुबेराय स्वाहा। (७ बार)
ॐ आँ क्रों ह्रीं ईशानाय स्वाहा। (७ बार)
ॐ आँ क्रों ह्रीं धरणेन्द्राय स्वाहा। (७ बार)
ॐ आँ क्रों ह्रीं सोमाय स्वाहा। (७ बार)

इति आहुतिमंत्राः।

दोहा–अर्चा दश दिग्पाल की, विधिवत करें विशेष।
विघ्न पूर्णतः दूर हों, शांती होय अशेष।।

ॐ ह्रीं इन्द्रादिदशतिक्पालेभ्यः इदं पूर्णार्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

(इस प्रकार दिक्पाल पूजा पूर्ण हुई।)

●

अथ द्वारपालानुकूलनं

''दोहा''

द्वारपाल चउ दिशा के, रक्षक बनें प्रधान।
आह्वानन् करते यहाँ, तिष्ठो निज स्थान।।

ॐ सोमादि द्वारपाल सांमुख्यविधानाय द्वारेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

पूर्व द्वार में–पुष्पांजलि करके अर्घ्य चढ़ाना–

धनुष हाथ ले 'सोम' हे! रक्षा कीजे आन।
यज्ञ भाग देते यहाँ, करो जगत् कल्याण।।१।।

ॐ धनुर्धराय अर अर त्वर त्वर हूँ सोम! अत्र आगच्छ आगच्छ...।

ॐ ह्रीं धनुर्धराय अर अर त्वर त्वर हूँ सोम! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं धनुर्धराय अर अर त्वर त्वर हूँ सोम! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सोमाय इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यता स्वाहा।

दक्षिण दिशा में पुष्पांजलि व अर्घ्य–

द्वारपाल यम दण्ड ले, तिष्ठो दक्षिण द्वार।
रक्षक बनकर तिष्ठिए, मानेंगे आभार।।२।।

ॐ ह्रीं दण्डधराय अर अर त्वर त्वर हूँ यम! अत्र आगच्छ आगच्छ...। ॐ ह्रीं यमाय इदमर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

वरुण पाशधर हाथ ले, तिष्ठो पश्चिम द्वार।
रक्षक बनकर तिष्ठिए, मानेंगे आभार।।३।।

ॐ पाशधराय अर अर त्वर त्वर हूँ वरुण! अत्र आगच्छ आगच्छ...। ॐ ह्रीं वरुणाय इदमर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

गदा हाथ ले अर स्वयं, तिष्ठो उत्तर द्वार।
रक्षक बनकर तिष्ठिए, मानेंगे आभार।।४।।

ॐ ह्रीं गदाधराय अर अर त्वर त्वर हूँ कुबेर! अत्र आगच्छ आगच्छ...।

ॐ ह्रीं कुबेराय इदमर्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यता प्रतिृह्यतां स्वाहा।

द्वारपाल चारों यहाँ, पूर्ण अर्घ्य ले आज।
मंगल कीजे चतुर्दिक, पूर्ण करो सब काज।।५।।

ॐ ह्रीं सोमादिचतुर्द्वापालेभ्यः इदं पूर्णार्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

इस प्रकार द्वारपालानुकूलन विधि पूर्ण हुई।

अथ यक्ष चतुष्टय पूजा

(अब विजय आदि चार यक्षों की पूजा है।)

(चाल छन्द)

जय मोह शत्रु पे पाए, वह 'विजय यक्ष' कहलाए।
श्री जिन पद पूज रचाओ, आ यज्ञ भाग को पाओ।।१।।

ॐ ह्म्ल्व्र्यूं विं विजययक्ष! बलिं (यज्ञभागं) गृहाण गृहाण स्वाहा।

''वैजयंत'' यक्ष कहलाए, जो जिन भक्ती में आए।
श्री जिन पद पूज रचाओ, आ यज्ञ भाग को पाओ।।२।।

ॐ ह्म्ल्व्र्यूं जं वैजयंत! बलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।

जो 'यक्ष जयन्त' कहाए, अतिशय महिमा को पाए।
श्री जिन पद पूज रचाओ, आ यज्ञ भाग को पाओ।।३।।

ॐ ह्म्ल्व्र्यूं जं जयंत! बलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।

'अपराजित यक्ष' कहाए, जिन भक्ति कर गुण गाए।
श्री जिन पद पूज रचाओ, आ यज्ञ भाग को पाओ।।४।।

ॐ ह्म्ल्व्र्यूं अं अपराजित! बलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।

दिग्वासी यक्ष निराले, जिन अर्चा करने वाले।
श्री जिन पद पूज रचाओ, आ यज्ञ भाग को पाओ।।५।।

ॐ ह्रीं विजयादियक्षेभ्य:! इदं पूर्णार्घ्यं यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

इस प्रकार विजयादि यक्षों की पूजा पूर्ण हुई।

अनावृत यक्ष पूजा

(अब ईशान दिशा में अनावृत यक्ष की पूजा करना)

शुभ यक्ष अनावृत गाए, जो गरुणारूढ़ हो आए।
श्री जिन पद पूज रचाओ, आ यज्ञ भाग को पाओ।।

ॐ दशदिशाधिनाथं त्रैलोक्यदंडनायकं जंबूद्वीपाधिपतिं गरुड़पृष्ठमारूढं स्निग्धभृंगांजनाभमक्षसूत्रकमंडलुव्यग्रहस्तं चतुर्भुजं शंखचक्रविधृतभुजादण्डं यक्षिणीसहितं सपरिजनसपरिवारमनावृतं देवमाह्वानयामहे स्वाहा।

हे अनावृत! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ:। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। अनावृताय स्वाहा। अनावृतपरिजनाय स्वाहा...

ॐ अनावृताय स्वगणपरिवृताय इदं अर्घ्यं....

।।इति अनावृतयक्षार्चनं।।

इति ब्रह्मोत्तपरि देवर्षिसत्कार:

(ब्रह्मेन्द्र के ऊपर लौकांतिकदेवों की पूजा करना)

(सखी छन्द)

यहाँ देव लोकांतिक आवें, निज यज्ञ भाग शुभ पावें।
श्री जिन पद पूज रचाओ, आ यज्ञ भाग को पाओ।।

ॐ ह्रीं लौकांतिकदेवेभ्य: पुष्पांजलिं क्षिपामि स्वाहा।

ॐ ह्रीं लौकांतिकदेवेभ्य: अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

अच्युतेन्द्र के ऊपर अहमिन्द्र का सत्कार

अहमिन्द्र स्वर्ग के भाई, जो बने परोक्ष सहाई।
श्री जिन पद पूज रचाओ, आ यज्ञ भाग को पाओ।।

ॐ ह्रीं अहमिन्द्रदेवेभ्य: पुष्पांजलिं क्षिपामि स्वाहा।

ॐ ह्रीं अहमिन्द्रदेवेभ्य: इदं जलं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे, प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

इत्यच्युतेन्द्रोपरि अहमिन्द्रपुष्पांजलि:।

''मंगलाष्टक स्थापना''

(अब पृथ्वी मंडल पर आठ मंगल द्रव्य स्थापित करना)

दोहा

श्वेत क्षत्र दर्पण ध्वजा, तोरण पंखा दीप।
तोरण नन्द्यावर्त ले, आएँ चरण समीप।।

ॐ श्वेतच्छत्रश्रियै स्वाहा। यह मंत्र बोलकर श्वेत छत्र स्थापित करें।
ॐ अब्दश्रियै स्वाहा। यह मंत्र बोलकर दर्पण स्थापित करें।
ॐ ध्वजश्रियै स्वाहा। यह मंत्र बोलकर ध्वजा स्थापित करें।
ॐ चामरश्रियै स्वाहा। यह मंत्र बोलकर चंवर स्थापित करें।
ॐ तोरणश्रियै स्वाहा। यह मंत्र बोलकर तोरण स्थापित करें।
ॐ तालवृंतश्रियै स्वाहा। यह मंत्र बोलकर पंखा स्थापित करें।
ॐ नंद्यावर्तश्रियै स्वाहा। यह मंत्र बोलकर स्वस्तिक स्थापित करें।
ॐ दीपश्रियै स्वाहा। यह मंत्र बोलकर दीपक स्थापित करें।

।।इति मंगलाष्टकस्थापनं।।

अथ आयुधाष्ट स्थापनं

(वहीं मंडल पर आठ आयुधों की स्थापना करें)

''चौपाई''

पूरव में 'इन्द्राणी' जानो, 'वज्रायुध' ले तिष्ठे मानो
जैन यज्ञ में बने सहाई, यज्ञ भाग जो पावे भाई।।१।।

ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा। (इस मंत्र से दक्षिण दिशा में वज्र आयुध स्थापित करें।)

'वैष्णवी' गरुणाशन से आवे, दक्षिण में 'चक्रायुध' लावे।
जैन यज्ञ में बने सहाई, यज्ञ भाग जो पावे भाई।।२।।

ॐ वैष्णव्यै स्वाहा। (इस मंत्र से दक्षिण दिशा में चक्रआयुध स्थापित करें।)

मोर पे चढ़ 'कौमारी' आवे, पश्चिम में जो 'खड्ग' चलावे।
जैन यज्ञ में बने सहाई, यज्ञ भाग जो पावे भाई।।३।।

ॐ कौमार्यै स्वाहा। (इस मंत्र से पश्चिम दिशा में तलवार आयुध स्थापित करें)

''वाराहिका'' 'हल' लेकर आवे, उत्तर में स्थित हो जावे।
जैन यज्ञ में बने सहाई, यज्ञ भाग जो पावे भाई।।४।।

ॐ वाराहिकायै स्वाहा। (इस मंत्र से उत्तर दिशा में हल आयुध स्थापित करें।)

'ब्रह्माणी' मुद्गर ले आवे, आग्नेय में स्थित हो जावे।
जैन यज्ञ में बने सहाई, यज्ञ भाग जो पावे भाई।।५।।

ॐ ब्रह्माण्यै स्वाहा। (इस मंत्र से आग्नेय दिशा में मुद्गर आयुध स्थापित करें।)

'लक्ष्मी' नैऋत दिश में आवे, 'गदा' साथ ले महिमा गावे।
जैन यज्ञ में बने सहाई, यज्ञ भाग जो पावे भाई।।६।।

ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा। (इस मंत्र से नैऋत्य दिशा में गदा आयुध स्थापित करें।)

चामुण्डा वायव्य में आवे, दण्ड साथ में अपने लावे।
जैन यज्ञ में बने सहाई, यज्ञ भाग जो पावे भाई।।७।।

ॐ चामुण्ड्यै स्वाहा। (इस मंत्र से वायव्य दिशा में दण्ड आयुध स्थापित करें।)

'भिंडिमाल' 'रुद्राणी' लावे, रक्षक बन ईशान में जावे।
जैन यज्ञ में बने सहाई, यज्ञ भाग जो पावे भाई।।८।।

ॐ रुद्राण्यै स्वाहा। (इस मंत्र से ईशान दिशा में भिंडिमाल आयुध स्थापित करें।)

इस प्रकार आठ आयुध की स्थापना विधिपूर्ण हुई।

●

''आठ पताका स्थापना विधि''

(अब वेदी-मंडल में आठों दिशाओं में आठ पताका स्थापित करना है)

'पीत वर्ण' की ध्वजा ले, पूरब दिश में जाय।
'प्रभा देवि' तिष्ठे स्वयं, मन में हर्ष बढ़ाय।।१।।

ॐ प्रभावत्यै स्वाहा। (इस मंत्र को बोलकर पूर्व दिशा में पीतवर्ण की ध्वजा स्थापित करें।

'पद्मवर्ण' की ध्वजा ले, आग्नेय में जाय।
स्थापित 'पद्मा' करे, मन में हर्ष बढ़ाय।।२।।

ॐ पद्मायै स्वाहा। (इस मंत्र को पढ़कर लालवर्ण की ध्वजा आग्नेय दिशा में स्थापित करें।)

'मेघ मालनी' कृष्ण 'प्रभ', दक्षिण दिश में जाय।
ध्वज स्थापित कर स्वयं, मन में हर्ष बढ़ाय।।३।।

ॐ मेघमालिन्यै स्वाहा। (इस मंत्र से दक्षिण दिशा में काली ध्वजा स्थापित करें।)

मनोहरा ध्वज 'हरित' ले, नैऋत दिश में जाय।
स्थापित कर वेदि पर, मन में हर्ष बढ़ाय।।४।।

ॐ मनोहरायै स्वाहा। (इस मंत्र से नैऋत्य दिशा में हरी ध्वजा स्थापित करें।)

'चन्द्रमालिका श्वेत' ध्वज, पश्चिम मे ले जाय।
स्थापित कर वेदि पर, मन में हर्ष बढ़ाय।।५।।

ॐ चन्द्रमालायै स्वाहा। (इस मंत्र से पश्चिम दिशा में श्वेत ध्वजा स्थापित करें।)

'नील वर्ण' की ध्वजा ले, वायव्य दिश में जाय।
स्थापित कर 'सुप्रभा', मन में हर्ष बढ़ाय।।६।।

ॐ सुप्रभायै स्वाहा। (इस मंत्र से वायव्य दिशा में नीलवर्ण ध्वजा स्थापित करें।)

'जया देवि' श्यामाभ ध्वज, उत्तर दिश में जाय।
स्थापित कर वेदि पर, मन में हर्ष बढ़ाय।।७।।

ॐ जयायै स्वाहा। (इस मंत्र से उत्तर दिशा में कृष्णवर्ण ध्वजा स्थापित करें।)

'पञ्च वर्ण' युत ध्वजा ले, दिश ईशान में जाय।
स्थापित 'विजया' करे, मन में हर्ष बढ़ाय।।८।।

ॐ विजयायै स्वाहा। (इस मंत्र से ईशान दिशा से पंचवर्णी ध्वजा स्थापित करें।

''अष्ट कलश स्थापना विधि''

(अब वेदी-मंडल पर पूर्वादि दिशाओं में आठ कलश स्थापित करें।)

पञ्च वर्ण के सूत्र से, वेष्टित कर त्रिबार।
पुष्पालंकृत कलश वसु, थापे भली प्रकार।।

ॐ इति कलशाष्टकस्थापनं करोमि स्वाहा।

''वाण चतुष्टय स्थापनं''

(वेदी-मंडल पर चारों दिशाओं में एक-एक बाण स्थापित करें।

''दोहा''

चतुष्कोंण में वाण रख, सरसों के भी पुंज।
धान्यांकुर के कुण्डधर, हर्षित हो मन कुंज।।

वाणचतुष्टयादिस्थापनाय वेदीकोणेषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

(मंडल के ऊपर चारों कोनों में पुष्पांजलि क्षेपण करें। पुनः एक-एक श्लोक पढ़कर उन-उन वाण आदि को स्थापित करें।

पुष्पांजलिं

सोरठा–तीक्ष्ण चतुष्टय वाण, भव्यों के जय हेतु ले।
स्थापित कर आन, मण्डल के चउ कोंण में।।१।।

आग्नेयादिविदिक्षु वाणान् स्थापयामि स्वाहा। (चारों कोनों पर वाण स्थापित करें।

इच्छित सिद्धीकार, सरसों के धर पुञ्ज शुभ।
हों अनिष्ट सब क्षार, ईशानादिक दिशा में।।२।।

ॐ सिद्धार्थपुंजस्थापनं स्वाहा। (चारों कोनों पर सरसों के पुंज स्थापित करें।)

वृद्धीकार यथेष्ट, पूजक के सुत जाति की।
धरे यवारक श्रेष्ठ, धान्यांकुर भृत कुंड ये।।३।।

ॐ यवारकस्थापनं करोमि स्वाहा। (मंडल के ऊपर धान्याकुरों के कुंडे स्थापित करें।)

शिलास्थापना

(अब वेदी-मंडल के ऊपर अग्रभाग में सिल-बट्टा को सूत्र से वेष्टित कर उस पर लवण की डली और गुड़ रखकर श्लोक व मंत्र पढ़कर स्थापित करें।)

सम चतुष्क सुन्दर शिला, सूत लपेटें श्वेत।
लवण गुड़ादिक रख विशद, थापें आनन्द हेत।।४।।

ॐ सर्वजनानंदकारिणि सौभाग्यवती! तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

यक्षेश्वर रक्षक सभी, सुर-नर के प्रतिपाल।
यज्ञ भाग दें आपको, गाते अब जयमाल।।५।।

ॐ ह्रीं यंत्रस्थापितसर्वदेवताभ्यः पूर्णार्घ्यं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां यजमानप्रभृतीनां शांतिं कुरुत कुरुत स्वाहा।

(पुष्पांजलि क्षेपण करना।)

त्रय प्रदक्षिणा चार दिश, तीन तीन आवर्त।
एक शिरोनति कर सुखद, करें जान सामर्थ्य।।

इस पद्य को बोलकर पुष्पाञ्जलिं क्षेपण करके यागमंडल की या भगवान की तीन प्रदक्षिणा देते हुए आगे की जयमाला पढ़ें।

''जयमाला''

दोहा—काल अनादि अनन्त शुभ, गाया धर्म त्रिकाल।
यागमण्डल की हम यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(ज्ञानोदय छन्द)

छियालिस गुण के धारी जिनवर, होते हैं अर्हन्त महान।
परम मंगलों में मंगल शुभ, कहे गये हैं सिद्ध प्रधान।।
परमेष्ठी आचार्य लोक में, पालन करते पञ्चाचार।
ज्ञान प्रदाता उपाध्याय गुरु, रत्नत्रय धारी अनगार।।१।।
विषयाशा के त्यागी साधू, होते हैं छियालिस गुणवान।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण युत, जैन धर्म है जगत प्रधान।।
मंगल उत्तम शरण चार ये, करने वाले जग कल्याण।
इनके श्रद्धानी ही पाते, अन्तिम सत्य सुपद निर्वाण।।२।।
अर्हत् तीन काल के पावन, जैनागम जिन चैत्य विशेष।
जिन चैत्यालय तीन लोक के, पूज्य कहे हैं जो अवशेष।।
मंत्र अनादी निधन कहा है, सर्व लोक में मंगलकार।
जिसको ध्याने वाले प्राणी, हो जाते भवदधि से पार।।३।।
जया आदी हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव।
चौबिस जिन माताएँ पावन, बत्तिस इन्द्र कहे जिनदेव।।
पञ्चादश तिथि देव कहे हैं, गगन में करते नित्य विहार।
चौबिस यक्ष यक्षिणी चौबिस, दिक्कन्याएँ मंगलकार।।४।।
दशदिक्पाल भक्त जिनवर के, द्वारपाल बतलाए चार।
यक्ष चार विजयादिक पावन, देव अनाव्रत रक्षाकार।।
ब्रह्म ऋषी लौकान्तिक गाए, अच्युतेन्द्र हैं देव प्रधान।
आयुध मंगल द्रव्य ध्वजाएँ, वाण कलश स्थापन जान।।५।।

दोहा—पूजा करके पूज्य की, पूज्य बनें धी मान।
अतः पूजते हम यहाँ, पाने पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं यंत्रस्थापितबहुविधसुरसमन्वितनवदेवताभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा—महिमा जिनकी अगम है, गरिमा का ना पार।
'विशद' भाव से पूजते, जिनपद मंगलकार।।

(ईत्याशीर्वाद)

(यागमंडल के चारों तरफ धूपघट स्थापित कर धूप खेते हुए मंडल के चारों तरफ आर्यपुरुष-यजमानों को बैठाकर श्वेत सुगंधित पुष्पों से उनसे अनादिसिद्ध मंत्र की जाप्य करावें। ७ बार या २१ बार या १०८ बार मंत्र जप करावें।)

दोहा—मण्डल के चारों दिशा, धूप घटों में धूप।
खेकर जिन अर्चा करें, पाएँ सुपद अनूप।।

अनादिसिद्धि मंत्र

ॐ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं

चत्तारिमंगलं-अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहु मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहुसरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि। ॐ ह्रौं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

इस प्रकार यागमंडल को विभूषित करके जाप्य करने की विधि पूर्ण हुई।

त्रिभुवन अर्चित सिद्ध पद, पूजें जो धी मान।
आराधन करके ''विशद'', पावें शिव सोपान।।

।।इत्याशीर्वादः।।

जलहोम-विधानम्

जलहोम कुंड भी तीर्थंकर कुंड के समान चौकोन बनावें, या बालू से चौकोन २×२ या १ (१/२) × १/२ फुट का चबूतरा बनाकर उसमें चारों तरफ तीन कटनी बनावें, उसके पश्चिम में दो कुंभ स्थापित करें।

तत्रादौ तावत्संकल्पूर्वकपुण्याहवाचनं कुर्यात्।

(शांतिहोम से पुण्याहवाचन से लेकर ''मौनव्रतं गृह्णामि'' पर्यंत क्रम विधि करके पुनः आगे से विधि करें)

(छन्द स्रग्धरा)

घण्टा टंकार वीणाक्वणित-मुरजधा-धां-क्रियाकाहलाच्छें।
छेंकारोदार-भेरी-पटह-धलधलंकार-सम्भूत घोषे।।
आक्रम्याशेषकाष्ठा तटमथ झटिति प्रोच्छटत्युद्भदेऽभ्रं।
शिष्टाभीष्टर्ह दिष्टिप्रमुख इह लतान्तांजलिं प्रोत्क्षिपामः।।१।।
वाद्यमुद्घोषपूर्वकं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

(उपजाति छन्द)

क्षेत्रं मखेऽस्मिन् परिपालयन्तं, विघ्ना-नशेषानपसारयन्तं।
वैश्वानराशा-परिकल्पितेन, श्रीक्षेत्रपालं बलिनाधिनोमि।।२।।

ॐ ह्रीं अत्रस्थ क्षेत्रपाल! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा।

ॐ ह्रीं अत्रस्थ क्षेत्रपालाय इदं...अर्घ्यं इत्यादि।

(बसन्ततिलका छन्द)

सर्वेषु वास्तुषु सदा निवसंतमेनं, श्रीवास्तुदेवमखिलस्य कृतोपकारं।
प्रागेव वास्तुविधिकल्पितयज्ञभागस्-येशानकोंणदिशि पूजनयाधिनोमि।।३।।

ॐ ह्रीं वास्तुकुमार देव! अत्र आगच्छ, तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्वाहा।

ॐ ह्रीं वास्तुकुमाराय इदं ... अर्घ्यं इत्यादि।

अनंतर वायुकुमार आदि की पूर्व और ईशान दिशा के मध्य स्थापना करना।

(शार्दूल विक्रीडित छन्द)

आलोप्याखिलकुंडवेदिजगती-मृत्पञ्चगव्यैर्मरुन्,
मेघाग्नीनमरान् समर्च्य वसुधा-मेतैर्विशोध्य त्रिधा।
सन्तार्प्यामृततोप्यहीन् कुशमथो, निक्षिप्य दिक्षु क्रमात्।
वार्दर्भादिभिरर्चयामि महितां, सर्वज्ञतुयक्षितिम्।।४।।

प्रकृतक्रमविध्यवधानाय वेद्यां पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(उपजाति छन्द)

विहारकाले जगदीश्वराणां, अवाप्तसेवार्थकृतापदानं।
हुत्वार्चितो वायुकुमार देव!, त्वं वायुना शोधय यागभूमिम्।।५।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेव महीं पूतां कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा।

(षट्दर्भपूलेन भूमिं सम्मार्जयेत्) वायुकुमार ही स्थापना व अर्घ्य।

विहारकाले जगदीश्वराणां, अवाप्तसेवार्थकृतापदानं।
हुत्वार्चितो मेघकुमार देव!, त्वं वारिणा शोधय यागभूमिम्।।६।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारदेव! धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं वं झं ठं क्षः फट् स्वाहा।

(षट्दर्भपूलोपात्तजलेन भूमिंसिंचेत्) मेघकुमार की स्थापना व अर्घ्य

गर्भान्वयादौ महितद्विजेन्द्रैः निर्वाणपूजासु कृतापदानं।
हुत्वार्चितो वह्निकुमारदेव!, त्वं ज्वालया शोधय यागभूमिम्।।७।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेव! भूमिं ज्वालय ज्वालय अं हं सं वं झं ठं क्षः फट् स्वाहा। ज्वलद्दर्भपूलानलेन भूमिं ज्वालयेत्। अग्निकुमार की स्थापना व अर्घ्य आगे का मंत्र बोलकर ईशान दिशा में पानी की अंजुली देवें।

तुष्टा अमी षष्टिसहस्रनागा, भवंत्ववार्या भुवि कामचाराः।
यज्ञावनीशान दिशाप्रदत्त-सुधोपमानांजलि-पूर्णवार्भिः।।८।।

ॐ ह्रीं क्रों षष्टिसहस्रसंख्येभ्यो नागेभ्यः स्वाहा। नागतर्पणआर्थमैशन्यां दिशि जलांजलिं क्षिपेत्। **दश दिशु दर्भन्यासः।**

ब्रह्मप्रदेशे निदधामि पूर्वं, पूर्वादिकाष्ठासु पुनः क्रमेण।
दर्भं जगद्गर्भजिनेन्द्रयज्ञ-विघ्नौघ-विध्वंसकृते समंत्रम्।।९।।

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः स्वाहा। इंद्रदर्भः इसी प्रकार आग्नेयदर्भः, यमदर्भः,

नैऋत्यदर्भः वरुणदर्भः, पवनदर्भः, कुबेरदर्भः, ईशान्यदर्भः धरणेंद्रदर्भः सोमदर्भः।
(ऐसा बोलते हुए दशों दिशा में दभ स्थापना करें)
भूदेवता का सत्कार करने हेतु आगे के मंत्रों से अष्टद्रव्य चढ़ावें।

वार्दर्भगंधैः सुमनोऽक्षतोघैः, धूपप्रदीपै-रमृतोपमान्नैः।
क्रमान्महामो महितां महद्भिः, महीं महादेव-महामहस्य।।१०।।

ॐ नीरजसे नमः जलं। शीलगंधाय नमः गंधं। अक्षताय नमः अक्षतान्। विमलाय नमः पुष्पं। परमसिद्धाय नमः चरुं। ज्ञानोद्योतनाय नमः दीपं। श्रुतधूपाय नमः धूपं। अभीष्टफलदाय नमः फलं। दर्पमथनाय नमः दर्भं।

।।इति भूम्यर्चनम्।।

आगे की वेदी के पास आकर विधि करें।

(शार्दूल विक्रीडित)

वेद्या मूर्ध्नि विधाय पीठमुचितं प्रक्षाल्य तीर्थांबुभिः,
प्रत्यग्रेन महाधनेन परितः प्रच्छाद्य दर्भैरपि।
अभ्यर्च्योपरि तस्य सज्जिनपते-रर्चां सतामर्जितां।
न्यस्यार्चामि सयक्ष-यक्ष्युपगतां चक्रातपत्रांचिताम्।।११।।

प्रकृतक्रमविध्यवधानाय पुष्पांजलिं क्षिपामि।

श्रीपाण्डुकाह्वय-शिलाग्रिमपीठकल्पं, तद्वेदिकोपरितटे निदधामिपीठम्।
प्रक्षालयामि शुचिभिः सलिलैः पटेन, प्रच्छादितेऽत्र निदधेऽक्षत-पुष्पदर्भान्।।१२।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्मं ठः ठः श्रीपीठस्थापनं करोमि स्वाहा।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन श्रीपीठप्रक्षालनं करोमि स्वाहा। तत्पीठोपरि प्रागग्रवस्त्राच्छादनं करोमि स्वाहा।
ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः दर्भस्थापनं करोमि स्वाहा। (सकुसुमाक्षतदर्भस्थापनम्) स्वच्छैस्तीर्थ-पीठं समभ्यर्चये। पीठ-जिसमें भगवान् विराजमान करना है, उसे अर्घ्य चढ़ावें।
ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय पीठार्चनम् करोमि स्वाहा।

(बसन्त तिलका छन्द)

संस्थापयाम्युपरि तस्य जिनेश्वरार्चां, चक्रत्रयं जिनपतेरपसव्यभागे।
छत्रत्रयं तदनु तस्य तु सव्यभागे, वादित्रजालजटिले सति सर्वलोके।।१३।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थाधिनाथ भगवन् इह पाण्डुकशिलपीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। प्रतिमा-स्थापनम्। दक्षिण-पार्श्वे चक्रत्रय-स्थापनम्। वामपार्श्वे छत्रत्रयस्थापनम्।
(श्रीपीठ-सिंहासन पर भगवान विराजमान करें। प्रतिमा के दायीं तरफ तीन चक्र एवं बायीं तरफ तीन छत्र स्थापित करें)

(शार्दूल विक्रीडित छन्द)

आहूता भवनामरै-रनुगता यं सर्वदेवास्तथा,
तस्थौ यस्त्रिजगत्-सभान्तरमहा-पीठाग्रसिंहासने।
यं हृद्यं हृदि संनिधाप्य सततं, ध्यायन्ति योगीश्वराः।
तं देवं जिनमर्चितं कृतधिया-माह्वाननाद्यैर्भजे।।१४।।

ॐ ह्रीं ह्रीं हूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अर्हं एहि एहि संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।
भगवान के चरणों पर जल छोड़ें, पुनः मंत्रोच्चारण कर पुष्पांजलि छोड़ें।

गद्य–**तीर्थौदकैर्-जिनपादो प्रक्षाल्य तदग्रे पृथग्मंत्रानुचारयन्।**
वार्गन्धाक्षतार्चित पुष्पांजलिं प्रयुंजीत।

पाद्यमंत्र–**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नमोर्हते स्वाहा।** (जलधारा छोड़े)
आचमन मंत्र–**ॐ ह्रीं इवीं क्ष्वीं वं मं हं सं तं पं द्रां द्रीं हं सः स्वाहा।** (जलधारा छोड़ें)

भगवान् जिनेन्द्रदेव की अष्टविधार्चन

ॐ ह्रीं परब्रह्मणेऽनंतानन्तज्ञानशक्तये जलं (गंध आदि से लेकर अर्घ्य पर्यंत चढ़ावें)

चक्रत्रय-छत्रत्रय पूजा

(उपजाति छन्द)

राजेन्द्र-देवेन्द्र-जिनेन्द्र यौग्यं, चक्रत्रयं मंगल-वस्तु-मुख्यम्।
निवेशितं श्रीजिनबिम्बपार्श्वे, यजामहे निर्मलवारिमुख्यैः।।१५।।

ॐ नीरजसे नमः-जलं। शीलगंधाय नम-गंधं। अक्षताय नमः-अक्षतान। विमलाय नमः-पुष्पं परमसिद्धाय नमः-चरुं। ज्ञानोद्योतनाय नमः-दीपं। श्रुतधूपाय नमः धूपं। दर्पमथनाय नमः-दर्भ इत्यादि।

लोकत्रयैकाधिपतित्व चिन्हं, छत्र-त्रयं मंगल-वस्तु मुख्यम्।
निवेशितं श्रीजिनवामभागे, यजामहे निर्मलवारिमुख्यैः।।१६।।

ॐ नीरज से नमः इत्यादि आगे की क्रिया यज्ञकुंड के आगे करें।

कुण्डात् पुरस्तात् परिमृष्टदेशे, सुविष्टरं न्यस्य सुदृष्टभृष्टम्।
तत्रोपविष्टोऽस्म्यथ पश्चिमास्यः, पर्यंकतो वाम्बुरुहासनाद्वा।।१७।।

ॐ ह्रीं क्षीं भूः शुद्धयतु स्वाहा। (यज्ञ भूमि शुद्धि करें)

ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्मं ठं आसनं निक्षिपामि स्वाहा। (आसन बिछावे)

ॐ ह्रीं अर्हं ह्युं ह्युं णिसिहिये णिसिहिये आसने उपविशामि स्वाहा। (आसन पर बैठें)

ॐ ह्रीं अर्हं मौनस्थितार्हं मौनव्रतं गृण्हामि स्वाहा। (पूजापर्यंत मौन रखें)

तीर्थोम्बुपूर्णोज्ज्वलशातकुंभ-कुंभस्य नालाद् गलितेन वारा।
कुण्डं शुभं सर्व-ममत्र-मत्र, द्रव्यं च सिंचामि समंत्र-मेव।।१।।

ॐ ह्रीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकनाथाय धर्मतीर्थकराय श्रीशांतिनाथाय, परमपवित्राय, पवित्ररजलेन होमकुण्डशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(इस मंत्र से होमकुंड पर पानी छिड़कें)

कुण्डपूजा

तीर्थेश संबंध समर्चनीय-श्रीगार्हपत्या-श्रयतोर्चनीयम्।
चैत्याश्रयत्वादित चैत्यगेहं, समर्चयामश्-चतुरस्र कुण्डम्।।२।।

ॐ नीरजसे नमः-जलं। शीलगंधाय नमः-गंधं। अक्षताय नमः-अक्षतान्। विमलाय नमः-पुष्पं। परमसिद्धाय नमः-चरुं। ज्ञानोद्योतनाय नमः-दीपं। श्रुतधूपाय नमः-धूपं। अभीष्टफलप्रदाय नमः-फलं। दर्पमथनाय नमः-दर्भं।

होमकुंड में तंदुल से स्वस्तिक बनावें, उस पर नयी ताँबे या पीतल की पतीली रखें, उस पतीली में जलयंत्र बनावें। पुनः होमकुंड के सामने स्थापित दो कुंभों का जल निम्नलिखित मंत्र पढ़ते हुए पतीली में डालते हुए उसका जल शुद्ध करें।

ॐ नमोऽर्हते भगवते पद्म-महापद्म-तिगिच्छ-केसरी-महापुंडरीक-पुण्डरीक-गंगा-सिंधु-रोहिद्-रोहितास्या-हरित्-हरिकान्ता-सीता-सीतोदा-नारी-नरकांता-सुवर्णकूला-रूप्यकूला-रक्ता-रक्तोदा-अनेक-नद-नदीजलप्रवाह-परिपूर्ण-मधुरजलधि-इक्षुरससमुद्र-घृतार्णव क्षीरसागर-प्रभृत्यखिलतीर्थदेवतामणिमयं मंगलकलश-संभृतनवरत्न-सुगंध-चूर्णपुष्पफलकुशाद्यैश्च रचितं तीर्थोदकं पवित्रं

कुरु कुरु झौं झौं वं मं हं सं तं पं इवीं हं सः असिआउसा जलशुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

पुनः शंवर नाम के यंत्र की पूजा करें।

ॐ नीरजसे नमः-जलं। शीलगंधाय नमः-गंधं। अक्षताय नमः-अक्षतान्। विमलाय नमः-पुष्पं। परमसिद्धाय नमः-चरुं। ज्ञानोद्योतनाय नमः-दीपं। श्रुतधूपाय नमः-धूपं। अभीष्टफलदाय नमः-फलं। दर्पमथनाय नमः-दर्भं।

-प्रथम-कटनी-मेखला-सत्कार-

नन्दां च भद्रां च जया च रिक्तां, पूर्णा च भूयो भुवि वर्तयन्ति।
ये ता-ननेकान्त-सुपक्षपक्षान्, न्यक्षेण यक्षप्रमुखान् प्रयक्ष्यये।।३।।

ॐ आँ क्रों ह्रीं पंचदशतिथिदेवताः अत्रागच्छत-अत्रागच्छत। तिष्ठत तिष्ठत ठःठः मम सन्निहिता भवत भवत वषट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं क्रों ह्रीं पंचदशतिथिदेवताभ्यः इदं अर्घ्यं पाद्यं इत्यादि अर्घ्यं।

-द्वितीय-कटनी-मेखला-सत्कार-

मेरुं परीत्यैव चरन्ति नित्यं, ये निग्रहानुग्रहदा नृलोके।
अवस्थिता ये बहि-रर्कमुख्याः, सर्वान् समाहूय समर्चये तान्।।४।।

ॐ आँ क्रों ह्रीं आदित्यादिनवग्रहदेवताः अत्रागच्छत अत्रागच्छत। तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः। मम सन्निहिता भवत भवत वषट् स्वाहा।

ॐ आँ क्रों ह्रीं नवग्रहदेवेभ्यो इदं... अर्घ्यमित्यादि०

-तृतीय-कटनी-मेखला सत्कार-

चतुर्णिकाय प्रभावमरेन्द्रान् जिनेन्द्रसेवा प्रसितान्तरंगान्।
प्रभूतभूत्द्युतिसौख्यबोधा-नाहूय मंत्रैः पृथ्गर्चयामि।।५।।

ॐ आँ क्रों ह्रीं असुरेन्द्रादिद्वात्रिंशदिंद्राः अत्रागच्छत अत्रागच्छत। तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः। मम सन्निहिता भवत भवत वषट् स्वाहा।

ॐ आँ क्रो ह्रीं नवग्रहदेवेभ्यो इदं... अर्घ्यमित्यादि०

-दिक्पाल-सत्कार-

एतत्सर्व जनीन जैनसवनप्रत्यूह विध्वंसन
प्रोद्भूताप्रतिम प्रभाव विहित प्रख्यातपूजांचितान्।
स्वस्वातुच्छपरिच्छदान् दशदिशा-मन्याप्रधृष्यामितान्,
दिक्पालन् जगदेक-पालकजिना-धीशाध्वरे व्याह्वये।।६।।

ॐ ह्रीं इन्द्रादिदशदिक्पालदेवाः अत्रागच्छत अत्रागच्छत, तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः, मम सन्निहिता भवत भवत वषट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं इन्द्रादिदशदिक्पालदेवाः अत्रागच्छत अत्रागच्छत, तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः, मम सन्निहिता भवत भवत वषट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं इन्द्रादिदशदिक्पालदेवेभ्यो इदमर्घ्यमित्यादि०-

।।सप्तधान्याहुतिः।।

दिक्पालका-निति समर्च्य यवान्विता ये, गोधूम-मुद्ग-चण-वल्लक-शालि-माषाः।
तत्सप्त-धान्यकृतमुष्टिभि्—रम्बुकुण्डे, सप्ताहुती-रिह दधे पृथ्गेव तेभ्यः।।७।।

सात धान्य-चना, तुवर, अरहर, उड़द, मूँग, गेहूँ, शाली और जौ इनको मिलाकर दिक्पाल मंत्रों से जलकुंभ में एक-एक मंत्र की सात-सात बार आहुति देवें।

-आहुति मंत्र-

ॐ आँ क्रों ह्रीं इन्द्राय स्वाहा। **ॐ आँ क्रों ह्रीं अग्नेय स्वाहा।**
ॐ आँ क्रों ह्रीं यमाय स्वाहा। **ॐ आँ क्रों ह्रीं नैऋत्याय स्वाहा।**
ॐ आँ क्रों ह्रीं वरुणाय स्वाहा। **ॐ आँ क्रों ह्रीं पवनाय स्वाहा।**
ॐ आँ क्रों ह्रीं धनदाय स्वाहा। **ॐ आँ क्रों ह्रीं ईशानाय स्वाहा।**
ॐ आँ क्रों ह्रीं धरणेन्द्राय स्वाहा। **ॐ आँ क्रों ह्रीं सोमाय स्वाहा।**
ॐ आँ क्रों ह्रीं शंबरनामधेयाय स्वाहा।

इत्थं सार-सपर्ययाद्य यूयं प्रसन्नाः स्थ नः।
सांगास्ताद्विकलापि मोहमुखतो युष्मत्प्रसादादियम्।
सर्वज्ञाध्वरविघ्नमाध्नत द्रुतं सर्वेऽपि दिक्पालकाः।
पूर्णांगा विधिपूर्तिपूर्णफलदां पूर्णाहुतिं वोऽर्पये।।८।।

।।पूर्णार्घ्यं।।

त्रिधान्याहुतिः

तीन धान्य—जौ, तिल और शालिधान्य इन तीनों को मिलाकर आगे लिखे नव मंत्रों से सात-सात बार जलकुंभ में आहुति देवें।

यवैस्तिलैः शालिभिरेव सप्त-सप्तस्वमुष्टि-प्रमितैर्विशुद्धैः।
होमं विधास्यामि समंत्रमंभः, कुण्डे ग्रहाणामिह सुप्रपत्यै।।९।।

ॐ ह्रीं ह्रः फट् आदित्यमहाग्रह (अमुकस्य)[१] शिवं कुरु कुरु स्वाहा। एवं सोमादिष्वपि प्रयुज्जीत।

ॐ ह्रीं ह्रः फट् सोममहाग्रह! अमुकस्य ... शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रः फट् मंगलमहाग्रह! अमुकस्य ... शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रः फट् बुधमहाग्रह! अमुकस्य ... शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रः फट् गुरुमहाग्रह! अमुकस्य ... शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रः फट् शुक्रमहाग्रह! अमुकस्य ... शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रः फट् शनिमहाग्रह! अमुकस्य ... शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रः फट् राहुमहाग्रह! अमुकस्य ... शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रः फट् केतुमहाग्रह! अमुकस्य ... शिवं कुरु कुरु स्वाहा।

जलतर्पणानि

अँजुली में दर्भ, गंध, अक्षत, पुष्प लेकर अँगुलि जल हवन कुंभ पर रखकर आगे के तर्पण मंत्र पढ़ते हुए जल डालते जावें।

अन्वतो विमलाम्भोभिर्-गंन्ध पुष्पाक्षतान्वितैः।
कुर्महे पीठिकामंत्रैस्-तर्पणं परमेष्ठिनाम्।।१०।।

ॐ सत्यजाताय नमः। अर्हज्जाताय नमः। परमजाताय नमः। अनुपमजाताय नमः। स्वप्रदाय नमः। अचलाय नमः। अक्षताय नमः। अव्याबाधाय नमः। अनंतज्ञानाय नमः। अनंतदर्शनाय नमः। अनंतवीर्याय नमः। अनंतसुखाय नमः। नीरजसे नमः। निर्मलाय नमः। अच्छेद्याय नमः। अभेद्याय नमः। अजराय नमः। अमराय नमः। अप्रमेयाय नमः। अगर्भवासाय नमः। अक्षोभ्याय नमः। अविलीनाय नमः। परमघनाय नमः। परमकाष्ठयोगरूपाय नमः। लोकाग्रवासिने नमः। परमसिद्धेभ्यो नमः। अर्हत्सिद्धेभ्यो नमः। केवलिसिद्धेभ्यो नमो नमः। अंतःकृतसिद्धेभ्यो नमो नमः। परंपारासिद्धेभ्यो नमो नमः। अनादिपरंपरासिद्धेभ्यो नमो नमः। अनाद्यनुपमसिद्धेभ्यो नमो नमः। सम्यग्दृष्टे-२ आसन्नभव्य २ निर्वाणपूजार्ह २ शंबर नामधेयाय स्वाहा।

---

१. अमुकस्य के स्थान में जिनके लिए हवन कर रहे हैं, उन यजमान का नाम लेना या ''चतुर्विधसंघस्य'' बोलना।

(आगे के मंत्रों से पुण्याहमंत्र का पानी तीन बार होम कुंड पर सिंचित करें।)

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः स्वाहा। ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः स्वाहा। ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय नमः स्वाहा। (इमान्मंत्रान् त्रिरुच्चार्य जलं सिंचेत्)

द्वादशांग स्पर्शमंत्र–ॐ ॐ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं वं मं हं सं तं पं द्रां द्रीं हं सः स्वाहा।

प्राणायाम मंत्र–

ॐ भूर्भुवः स्वः असिआउसा अर्हं प्राणायामं करोमि स्वाहा।

(इमं मंत्रं नासिकामंगुष्ठानामिकाग्रेण धृत्वा त्रिवारान् जपेत्।।)

(प्राणायाम मंत्र को अंगूठा और अनामिका अंगुली से नाक के दोनों भागों पर रखकर तीन बार जपें)

दिक्पालाः प्रतिसेवनाकुलजगद्दोषार्हदण्डोद्भटाः,
सौधर्मः प्रणयेन बद्धभगवत्-सेवानियोगेन वा।
पूजापात्रकराग्रहः सदमुपेत्योपात्य बलार्चनं,
प्रत्युहान्-निखिलान् निरस्यतु जिन्स्नानोत्सवोत्साहिनाम्।।११।।

आदेषणार्घ्यः

ॐ आँ क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्ण-सर्वलक्षणसंपूर्ण-स्वायुधवाहन-वधूचिन्ह-सपरिवाराः हे पंचदशतिथीदेवाः नवग्रहदेवाः, द्वात्रिंशदिन्द्राः, दश लोकपालाः, शंबरनामधेयादि-सर्वे देवता इदं जलादिकमर्चनं यूयं अत्र गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं ॐ भूर्भुवः स्वाहा। पूर्णाहुतिः।

(यहाँ पूर्णार्घ्य देना)

।।इति जलहोमविधानम् समाप्तम्।।

●

हवन विधि

हवन की सामग्री

बादाम पिस्ताखर्जूरा-मज्जा वैनारिकेलजा।
दुग्धं प्रचुरसर्पिश्च, शर्कराद्राक्षयान्विता।।
लवंगकर्पूर सुमिश्रितानां, चूर्णैसुतैलादि सुगंधजातैः।
युक्तं जिनेंद्रस्य-मते प्रशस्तं, होतार्हणे द्रव्य कदंवकं वैः।।

बादाम, पिस्ता, छुहारा, नारियल का खोपरा, दाख, लौंग, कर्पूर, सफेद चंदन, लाल चन्दन, चिरौंजी, सुगंधवाला, देवदारू, अगर, तगर, बालछड़, पानड़ी, कपूरकचरी, नागरमोंथा, छारछवीला, इत्यादि सुगंधित द्रव्यों का चूर्ण मिलाना चाहिए।

इसी में घी, बूरा मिलाना चाहिए तथा आहुति के लिए अलग वर्तन में घी रखना चाहिए। घी की आहुति के लिए काठ के चमचे भी होने चाहिए।

जितने मंत्र जपे हों उनके दशांश आहुतियाँ उसी मंत्र की दी जाती हैं, उनके शिवाय पीठिका आदि मंत्रों की आहुतियाँ दी जातीं हैं। इन सब आहुतियों के अनुसार हवन सामग्री तैयार करनी चाहिए। तथा आक्, ढाक्, आम, पीपल, बड़, चंदन, लालचंदन की सूखीपतली छोटी लकड़ियाँ भी रखनी चाहिए।

हवन की विधि

हवन के लिए लम्बे चौड़े स्थान में कुण्ड बनावे। वे इस प्रकार हों– प्रथम तीर्थंकर कुण्ड एक अरत्नि (मुंठी बँधे हाथ को अरत्नि कहते हैं) लम्बा, चौड़ा चौकोर हो, इतना ही गहरा हो इसकी तीन कटनी हों। पहली ५ अंगुल की ऊँची चौड़ी, दूसरी ४ अंगुल की, तीसरी ३ अंगुल की हो। इस कुण्ड के दक्षिण की ओर त्रिकोण कुण्ड उसी प्रमाण से लम्बा, चौड़ा, गहरा हो तथा उत्तर की ओर गोल कुंड उतना ही लम्बाई, चौड़ाई गहराई वाला हो। प्रत्येक कुंड का एक दूसरे से अन्तर चार-चार अंगुल का होना चाहिए। इन कुंडों की प्रत्येक कटनी पर ॐ ॐ ॐ ॐ-रं रं रं रं लिखना चाहिए।

ये कुण्ड कच्ची ईंटों से एक दिन पहले तैयार करा लेना चाहिए और इन्हें सुन्दर रंगों से रंग देना चाहिए। भीतर का भाग पीली या सफेद मिट्टी से पोत देना चाहिए। कुण्डों की तीन कटनियों पर चार-चार पतली खूंटी गाड़े या छोटे छोटे गिलास रक्खे जिनमें कलावा लपेटा जा सके। कलावा लपेटते समय यह मंत्र बोलना चाहिए।

सूत्र वेष्टन मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं पंचवर्ण सूत्रेण त्रीनवारान् वेष्ट्यामि।

इस प्रकार एक खूंटी से दूसरी खूंटी और दूसरी से तीसरी खूंटी तथा तीसरी से चौथी खूंटी तक कलावा लपेटें।

कुण्डों के पास दक्षिण या पश्चिम में एक वेदी बनावें जैसी मंडप के पास बनाई गई थी। उसमें सिद्ध यंत्र विरामान करें। वेदी के पास एक चौकी रक्खे जिस पर मंगल कलश रक्खा जाय। एक बड़ी संदली पर एक बड़ा और कुछ छोटे कलश जल से भरे रखकर मंत्र द्वारा जल शुद्ध करें। (कलशों पर चंदन छिड़के)

मंगल कलश स्थापना मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्म महापद्म तिंगिच्छ केशरी पुण्डरीक-महापुण्डरीक-गंगा सिंधुरोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकांता सीतासीतोदा नारीनरकांता सुवर्णरूप्य कूला-रक्तारक्तोदा-पयोधिशुद्धजलसुवर्णघट-प्रक्षालित नवरत्न-गंधाक्षतपुष्पार्चितमामोदकं पवित्रं कुरू कुरू झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

वेदी के पास जो चौकी है उस पर अक्षत बिछाकर बड़ा मंगल कलश स्थापन-करें, तब यह पढ़ें–

वेद्यामूले पंचरत्नोपशोभं, कंठे लाम्बान् माल्यामादर्शयुक्तम्।
माणिक्याभं कांचनं पूगदर्भक्, वासोभं सद्घटं स्थापयेद् वै।।
ओं मंगल कलश स्थापनं करोमि स्वाहा।

चार छोटे चोटे कलश कुण्डों पर स्थापन करने का मंत्र

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुष्कलशान् संस्थापयामि स्वाहा।

कुण्डोंपर चार दीपक जलाकर रखने का मंत्र–

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं संस्थापयामि।

पूजा सामग्री तथा हवन सामग्री शुद्धि मंत्र–

ॐ ह्रीं पवित्रतर जलेन शुद्धिं करोमि स्वाहा।

डाभ दूबके पूले से हवन भूमि झाड़ने का मंत्र-

ॐ ह्रीं वायुकुमार सर्व विघ्नविनाशनं कुरू कुरू हूँ फट् स्वाहा।

डाभ दूबपूला जल में भिंगोकर पृथ्वी पर छिड़कने का मंत्र

ॐ ह्रीं मेघकुमार धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं तं झं झं यं क्षः फट् स्वाहा।

यत्रं प्रक्षालन का मंत्र

ॐ ह्रीं भूर्भुवः स्वदिह एतद्विघ्नौघवारकं यन्त्रमहं परिसिंचयामि स्वाहा।

होम कुंड के पश्चिमपीठ पर यंत्र स्थापित करने का मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं जगतां सर्वशांतिं कुर्वंतु श्री पीठेयंत्रस्थापनं करोमि स्वाहा।

यंत्र पूजामंत्र–(अर्घ्य चढ़ावे)

ॐ ह्रीं नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं नमः परमात्मभ्यः स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनादिनिधनेभ्यः स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो नृसुरासुर पूजितेभ्यः स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनंत दर्शनेभ्यः स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनंत वीर्येभ्यः स्वाहा।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रायाप्रतिहत तेजसे स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्वेत छत्रत्रय श्रियै स्वाहा।

शास्त्रपूजा

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं र्हं सौं ह्रौं सर्वशास्त्रप्रकाशिनिवद वद् वद् वाग्वादिनि अवतर अवतर, तिष्ठ तिष्ठ, सन्निहिता भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत स्याद्वादनयगर्भित द्वादशांगश्रुत ज्ञानार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। इति शास्त्रपूजा।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र पवित्रतरगात्र, चतुरशीतिः लक्षोत्तर

गुणाष्ट दशसहस्रशीलधर गणधर चरण! आगच्छ आगच्छ तिष्ठ तिष्ठ सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्रादि गुण विराजमानाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्यार्चन

ॐ ह्रीं नीरजसे नमः। जलम्।
ॐ ह्रीं शीलगंधाय नमः। गंधम्।
ॐ ह्रीं अक्षताय नमः। अक्षतम्।
ॐ ह्रीं विमलाय नमः। पुष्पम्।
ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः। नैवेद्यम्।
ॐ ह्रीं ज्ञानद्योतनाय नमः। दीपम्।
ॐ ह्रीं श्रुतधूपाय नमः। धूपम्।
ॐ ह्रीं अभीष्टफलदाय नमः। फलम्।
ॐ ह्रीं परमसिद्धाय नमः। अर्घ्यम्।

इसके बाद अग्नि कुण्ड में सांथिया बनावे या ॐ लिखें, बाद में कपूर और डाभ दूब के पूले से अग्नि स्थापित करें।

अग्नि स्थापन मंत्र

ॐ होमार्थं अग्नित्रयाधारभूतां समिधां स्थापयामि।
ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं अग्निं स्थापयामि।

(उपजाति छन्द)

जिनेंद्रवाक्यैरिव सुप्रसन्नैः, संशुष्कदर्भाग्रघृतानि कीलैः।
कुण्डस्थिते सेंधनशुद्धवन्ह्नौ, संधुक्षणं संप्रति संतनोमि।।

ॐ ह्रीं श्रीं रं रं रं रं दर्भपूलेन ज्वलय ज्वलय नमः फट् स्वाहा। (कुण्ड में दर्भ पूल कपूर छोड़ें)।

(बसन्ततिलका छन्द)

श्रीतीर्थनाथ परिनिवृतिपूतकाले, ह्यागत्य बह्निसुरपामुकुटोल्लसद्भिः।
बह्निब्रजैर्जिनपदेहमुदार भक्त्या, देहुस्तदग्निमहमर्चयितुं दधामि।।

ॐ ह्रीं चतुरस्रे तीर्थंकर कुण्डे गार्हपत्याग्नये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौकोर कुण्ड में अर्घ्य चढ़ावे)

(उपजाति छन्द)

गणाधिपानां शिवयाति कालेऽ, अग्नींद्रोत्तमांग स्फुरदुग्ररोचिः।
संस्थाप्य पूज्यश्च समाह्वनीयो, विघ्नौघशान्त्यै विधिना हुताशः।।

ॐ ह्रीं श्रीं वृत्ते द्वितीय गणधरकुण्डे आह्वनीयाग्नयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (गोल कुण्ड में अर्घ्य चढ़ावें)

श्री दक्षिणाग्निः परिकल्पितश्च, किरीटदेशात्प्रणताग्नि देवैः।
निर्वाणकल्याणकपूतकाले, तमर्चये विघ्नविनाशनाय।।

ॐ ह्रीं श्रीं त्रिकोंणे तृतीय सामान्य केवलिकुण्डे दक्षिणाग्नयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (शुद्ध घी से आहुतियाँ देवें कुंड में अर्घ्य चढ़ावें)

नवदेव आहुति मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हद्भ्रा: स्वाहा। ॐ ह्रीं सिद्धेभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं सूरिभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं पाठकेभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं साधुभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं जिनधर्मेभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं जिनागमेभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं जिनबिंबेभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं जिनचैत्यालयेभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नम: स्वाहा। ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नम: स्वाहा। ॐ ह्रीं सम्यक् चारित्राय नम: स्वाहा।

पीठिका मंत्र

षट् त्रिंशत्पीठिका मंत्रैः काम्य मंत्रावसानकैः।
इज्यावशिष्ठत हव्याद्यैः कुर्वे तावतिथाहुतिः।।

ॐ सत्य जाताय नम: स्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय नम: स्वाहा। ॐ अनुपमजाताय नम: स्वाहा। ॐ स्वप्रधानाय नम: स्वाहा। ॐ अचलाय नम: स्वाहा। ॐ अक्षयाय नम: स्वाहा। ॐ अव्याबाधाय नम: स्वाहा। ॐ अनंत ज्ञानाय नम: स्वाहा। ॐ अनंत दशरनाय नम: स्वाहा। ॐ अनंतवीर्याय नम: स्वाहा। ॐ अनंत सुखाय नम: स्वाहा। ॐ नीरज से नम: स्वाहा। ॐ निर्मलाय नम: स्वाहा। ॐ अच्छेद्याय नम: स्वाहा। ॐ अमेद्याय नम: स्वाहा। ॐ अजराय नम: स्वाहा। ॐ अमराय नम: स्वाहा। ॐ अप्रमेयाय नम: स्वाहा। अगर्भवासाय नम: स्वाहा। ॐ अक्षोभाय नम: स्वाहा। ॐ

अविलीनाय नमः स्वाहा। ॐ लोकाग्रवासिने नम स्वाहा। ॐ परम सिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। ॐ अनादिपरमसिद्धेभ्यो नमो नमः स्वाहा। ॐ परम काष्ठायोगरूपाय नमः स्वाहा। ॐ लोकाग्रवासिने नमः स्वाहा। ॐ परम सिद्धेभ्यो नमः स्वाहा। ॐ अनादिपरमसिद्धेभ्यो नमो नमः स्वाहा। ॐ अर्हसिद्धेभ्यो नमो नमः स्वाहा। ॐ केवलि सिद्धेभ्यो नमो नमः स्वाहा। ॐ अन्तः कृतसिद्धेभ्यो नमो नमः स्वाहा। ॐ परम्परा सिद्धेभ्यो नमो नमः स्वाहा। ॐ अनादिपरम्परासिद्धेभ्यो नमो नमः स्वाहा। ॐ परम्परा सिद्धेभ्यो नमो नमः स्वाहा। ॐ अनादिपरम्परासिद्धेभ्यो नमो नमः स्वाहा। ॐ परमार्थ सिद्धेभअयो नमो नमः स्वाहा। ॐ अनाद्यनुपमसिद्धेभ्यो नमो नमः स्वाहा। ॐ त्रिकालसिद्धेभ्यो नमो नमः स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्हष्टे आसन्नभव्य आसन्नभव्य निर्वाणपूजार्ह निर्वाणपूजार्ह अग्रीनद्राय स्वाहा। सेवा फलं षट् परम स्थानं भवतु अपमृत्यु विनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

जाति मंत्र

अष्टभिर्जाति मंत्रैश्च, तावद्व्यग्र मानसः।
पूजयावशिष्ट हव्याद्यै, कुर्वे तावतिथाहुतीः।।

ॐ सत्यजन्मनः शरणं प्रपद्यामि स्वाहा। ॐ अर्हज्जन्मनः शरणं प्रपद्यामि स्वाहा। ॐ अर्हन्मातुः शरणं प्रमद्यामि स्वाहा। ॐ अर्हत्सुतस्यशरणं प्रपद्यामि स्वाहा। ॐ अनुपमजन्मनः शरणं प्रपद्यामि स्वाहा। ॐ रत्नत्रययस्य शरणं प्रपद्यामि स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे ज्ञानमूर्ते सरस्वति सरस्वति स्वाहा। सेवा फलं षट् परम स्थानं भवतु अपमृत्यु विनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

निस्तारक मंत्र

निस्तरकादिभिर्भत्रैः एकादशमितै-रयम्।
पूज्यावशिष्ट-हव्याद्यैः, कुर्वे तावतिथाहुतीः।।

ॐ सत्य जाताय स्वाहा। ॐ अर्हज्जातायस्वाहा। ॐ षट् कर्मणे स्वाहा। ॐ ग्रामपतये स्वाहा। ॐ अनादि श्रोत्रियाय स्वाहा। ॐ स्नातकाय स्वाहा। ॐ श्रावकाय स्वाहा। ॐ देव ब्राह्मणाय स्वाहा। ॐ सुब्राह्मणाय

स्वाहा। ॐ अनुपमाय स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे निधिपते निधिपते वैश्रवण वैश्रवण स्वाहा। सेवा फलं सप्तपरम स्थानं भवतु अपमृत्युविनाशनं भवतु। समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

ऋषि मंत्र आहुति

ऋषिमंत्रै र्महष्युक्तैर्-पञ्चदशमितै-रथ।
पूज्यावशिष्ट हव्याद्यैः कुर्वे तावतिथाहुतीः।।

ॐ सत्य जाताय नमः स्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय नमः स्वाहा। ॐ निर्ग्रंथाय नमः स्वाहा। ॐ वीतरागाय नमः स्वाहा। ॐ महाव्रताय नमः स्वाहा। ॐ त्रिगुप्ताय नमः स्वाहा। ॐ महायोगाय नमः स्वाहा। ॐ विविधयोगाय नमः स्वाहा। ॐ विविधर्द्धये नमः स्वाहा। ॐ अंगधराय नमः स्वाहा। ॐ पूर्वधराय नमः स्वाहा। ॐ गणधराय नमः स्वाहा। ॐ परमऋद्भ्यो नमः स्वाहा। ॐ अनुपमजाताय नमो नमः स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे भूपते भूपते नगरपते नगरपते कालश्रमण कालश्रमण स्वाहा। सेवाफलं षट् परम स्थानं भवतु अपमृत्यु विनाशं भवतु। समाधिमरणं भवतु। स्वाहा।

सुरेन्द्र मंत्र से आहुति

अथ त्रयोदशभिर्-मंत्रैः, सुरेंद्रादिभिरांजसैः।
इज्यावशिष्ट हव्याद्यैः, कुर्वे तावतिथाहुतीः।।

ॐ सत्यजातायस्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा। ॐ दिव्यजाताय स्वाहा। ॐ दिव्यार्चिजाताय स्वाहा। ॐ नेमिनाथायस्वाहा। ॐ सौधर्माय स्वाहा। ॐ कल्पाधिपतये स्वाहा। ॐ अनुचराय स्वाहा। ॐ परम्परेन्द्राय स्वाहा। ॐ अहमिन्द्राय स्वाहा। ॐ परमार्हताय स्वाहा। ॐ अनुपमाय स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे कल्पपते कल्पपते दिव्यमूर्ते दिव्यमूर्ते वज्रनामन् वज्रानमन् स्वाहा। सेवाफलं षट् परमस्थानं भवतु अपमृत्यु विनाशनं भवतु। समधिमरणं भवतु। स्वाहा।

परमराजरादिमंत्रो से आहुति

मंत्रैः परम राजाद्यैः अथ नवसु संख्यकैः।
इज्यावशिष्ट हव्याद्यैः कुर्वे तावतिथाहुतीः।।

ॐ सत्य जाताय स्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा। ॐ अनुपमेद्राय स्वाहा। ॐ विजयार्च्यजाताय स्वाहा। ॐ नेमिनाथाय स्वाहा। ॐ परमजाताय स्वाहा। ॐ परमार्हताय स्वाहा। ॐ अनुपमाय स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे उग्रतेजः उग्रतेजः दिशांजय दिशांजय नेमिविजयनेमि विजय स्वाहा। सेवाफलं षट् परम स्थानं भवतु अपमृत्यु विनाशनं भवतु। समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

परमेष्ठीमंत्रों से आहुति

परमेष्ठ्यादिभिर्-मंत्रैः, त्रयोविंशति-मितै-रथ।
इज्यावशिष्ट हव्याद्यैः, कुर्वे तावतिथाहुतीः।।

ॐ सत्यजाताय नमः स्वाहा। ॐ अर्हज्जाताय नमः स्वाहा। ॐ परमजाताय नमः स्वाहा। ॐ परमार्हताय नमः स्वाहा। ॐ परमरूपाय नमः स्वाहा। ॐ परम तेजसे नमः स्वाहा। ॐ परमगुणाय नमः स्वाहा। ॐ परमस्थानाय स्वाहा। ॐ परमयोगिनेनमः स्वाहा। ॐ परमभाग्याय नमः स्वाहा। ॐ परमर्द्धये नमः स्वाहा। ॐ परमप्रसादाय नमः स्वाहा। ॐ परम कांक्षाय नमः स्वाहा। ॐ परम विजयाय नमः स्वाहा। ॐ परम विज्ञानाय नमः स्वाहा। ॐ परम दर्शनाय नमः स्वाहा। ॐ पमवीर्याय नमः स्वाहा। ॐ परम सुखाय नमः स्वाहा। ॐ सर्वज्ञाय नमः स्वाहा। ॐ अर्हतेनमः स्वाहा। ॐ परमेष्ठिने नमो नमः स्वाहा। ॐ परमनेत्रे नमो नमः स्वाहा। ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे त्रिलोक विजय त्रिलोक विजय धर्ममूर्ते धर्ममूर्ते धर्मनेमे धर्मनेमे स्वाहा। सेवाफलं षट् परमस्थानं भवतु अपमृत्यु विनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

(इसके बाद जिसमंत्र का जितना जाप्य किया हो उस की दशांश आहुति देवें)

क्षीरद्रुमाणां च पलाशकानां, नवांगुलाया-मसमिद्धि-रद्य।
द्वित्र्यंगुलनाहमयीभिरग्नौ, करात्करोम्यष्टशतेन होमम्।।

ॐ नमोऽर्हतेभगवते प्रक्षीणाशेषदोष कल्मषाय दिव्य तेजोमूर्तये नमः श्रीशांतिनाथाय शांतिकराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु विनाशनाय

सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्वक्षामडामर विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा सर्वशातिं कुरु कुरु स्वाहा।

(इस मंत्र से गार्हपत्य कुंड में १०८ समिधा की आहुति देवें)

नव्येन गव्येन घृतेन सम्यक्, स्रुवार्पिते-नाहुतिभिः कृताभिः।
होमंविधास्यामि समितसमान, संख्याभि-रत्यूर्जित शांति मंत्रैः।।

(ॐ नमोऽअर्हते भगवते आदि उपरोक्त मंत्र से गार्हपत्य कुंड में १०८ घी की आहुति देवें)

लवंग लाजैस्तिल तंडुलाद्यैः कर्पूर काश्मीरपय; पटीरैः।
सितादिभिः साष्टशतंविमिश्रैः कृताहुतीरस्टशत जुहोमि।।

(ॐ नमोऽअर्हते भगवते आदि उपरोक्त मंत्र से अथवा जाप्य मंत्र से १०८ लवंग की आहुति देवें)

पूर्णाहुति मंत्र

जिनेश्वराणां च तिथीश्वराणां, गृहामराणां च दिशाधिपानाम्।
अग्नेः प्रसादाय तदीय मंत्रै, राज्येन पूर्णाहुति-मातनोमि।।

(पूर्णाहुति करते समय होम कुंड में अखंड धारा घी से करें पुनः नारियल आदि उसी में छोड़ देवें।)

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्ध केवलिभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं क्रौं पंचदशतिथिदेवेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं क्रौ नवग्रह देवेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं क्रौं द्वात्रिंशदिन्द्रेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं क्रौं दशलोकपालकेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं अग्नींद्राय स्वाहा।

(हवन की समाप्ति होने पर जो घट स्थापित किया था उसे हाथ में लेकर इन्द्र शांति धारा दे। उसके बाद पुण्याहवाचन करें।)

पुण्याह वाचन

ॐ पुण्याहं-पुण्याहं, प्रीयंतां-प्रीयंतां भगवन्तो अर्हतः सर्वज्ञः सर्वदर्शिनः सकलवीर्याः सकलसुखास्त्रिलोकेशास्त्रि लोकेश्वरपूजितास्त्रिलोकनाथास्त्रिलोक-महिता त्रिलोक प्रद्योतनकरा जातिजरामरण विप्रमुक्ताः सर्वविदश्च ॐ श्री ह्रीं धृति कीर्ति बुद्धि लभ्यम्यश्च वः प्रीयंतां प्रीयंताम्। ॐ वृषभादि वर्धमानाः

शांतिकरा: सकल कर्मरिपुकांतार दुर्ग विषयेषु रक्षन्तु मे जिनेंद्रा: आदित्य सोमांगारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु नाम नवग्रहाश्च व: प्रीयतां प्रीयंतां। तिथि करण नक्षत्र बार मुहूर्त लग्न देवाश्च इहान्यत्र ग्राम नगराधि देवताश्च ते सर्वे गुरु भक्ता: अक्षीणकोष कोष्ठागारा भवेयुर्दान-तपोवीर्य-धर्मानुष्ठानादिनत्यमेवास्तु। मातृपितु भ्रातृ-पुत्र-पौत्र कलत्र-गुरु-सुहृत् स्वजन संबंधि-बंधुवर्ग सहितस्यास्य यजमानस्य अमुक नामधेयस्य धन धान्ययैश्वर्य द्युतिबल-यश कीर्ति बुद्धिबर्धनं भवतु सामोद; प्रमोदोभवतु शांतिर्भवतु। तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु सिद्धिर्भवतु वृद्धिर्भवतु अविध्नमस्तु आरोग्यमस्तु आयुष्मस्तु शुभंकर्मास्तु कर्मसिद्धिस्तु शास्त्रसमृद्धिरस्तु इष्टं संपदस्तु अरिष्टनिरसनमस्तु धनधान्य समृद्धिरस्तु काममांगल्योत्सवा: संतु घोराणि शाम्यंतु पापानि शाम्यंतुपुण्यं वर्धतां धर्मोवर्धतां श्रीचवर्धतां आयुर्वधतां कुलंगोत्रं चाभिवर्धेतां स्वस्ति भद्रं चास्तु व: स्वस्तिभद्रं चास्तु न: क्ष्वी क्ष्वीं हं स: स्वस्त्यस्तु ते स्वस्त्यस्तु मे स्वाहा। श्रीमज्जिनेद्रचरणारविदेष्वानन्दभक्ति: सदास्तु।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि व्यसन वर्जितम्।
अभयं क्षेम-मारोग्यं स्वस्ति तेषु विधीयते।।

श्रीशांतिरस्तु शिवमस्तु जयोस्तु नित्यमारोग्यमस्तु तव दृष्टि दुपुष्टिरस्तु कल्याणमस्तु सुखमस्त्वाभिवृद्धिरस्तु दीर्घायुरस्तु कुलगोत्रधनं धान्यं सदास्तु।

(इसके बाद शांति पाठ और विसर्जन करें।)

रत्नत्रयार्चन-मयोत्तम होमविभूतिः,
युष्माकमाबहतु वासवदिव्य भूतिम्।
षट्खण्डभूमिविजयप्रभवां विभूतिम्,
त्रैलोक्यराज्यविषयां परमां विभूतिम्।।

(इस आशीर्वाद श्लोक को पढ़ते हुए याजक यजमान आदिजनों को शांतिमंत्र से मंत्रित वह भस्म देवे)।

जिनवाणी पूजा

स्थापना

श्री जिनेन्द्र की देशना, जग में रही महान।
जिनवाणी का निज हृदय, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

पाईता छन्द

हम निर्मल नीर चढ़ाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित यह गंध बनाए, भव ताप नशाने आए।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्व० स्वाहा।

अक्षत अक्षय फल दायी, यह चढ़ा रहे हैं भाई।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।३।।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।४।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व० स्वाहा।

नैवेद्य सरस शुभकारी, जो क्षुधा के रहे निवारी।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।५।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व०स्वाहा।

घृत का शुभ दीप जलाएँ, हम मोह से मुक्ती पाएँ।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।६।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व०स्वाहा।

अग्नी में धूप खिवाएँ, कर्मों का पुञ्ज जलाएँ।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।७।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व०स्वाहा।

फल सरस चढ़ाते भाई, कहलाए मोक्ष प्रदायी।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।८।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्व०स्वाहा।

पावन यह अर्घ्य बनाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।९।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व०स्वाहा।

दोहा–प्रासुक जल से दे रहे, जलधारा शुभकार।
धर्म हृदय में धारकर, पाएँ भवदधि पार।।

।।शान्तये शांतिधारा।।

दोहा–पुष्पाञ्जलि करने यहाँ, लाए सुरभित फूल।
यही भावना है विशद, पाएँ भव का कूल।।

।।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

जयमाला

(बेसरी छन्द)

आचारांग प्रथम कहलाए, पद अष्टादश सहस बताए।
दूजा सूत्र कृतांग बताया, पद छत्तीस सहस मय गाया।।
स्थानांग तीसरा जानो, ब्यालिस सहस सुपद युत मानो।
चौथा समवायांग कहाए, चौंसठ सहस लाख पद पाए।।
व्याख्या प्रज्ञप्ति पाँचवा सारं, पद दो लाख अट्ठाइस हजारं।
ज्ञातृकथा छठवाँ शुभकारी, पाँच लाख छप्पन हज्जारी।।
सप्तम उपासकाध्ययन में जानो, सत्तर सहस ग्यारह लख मानो।
अन्तः कृतदश अठम ऋषीशं, सहस अट्ठाइस लाख तेईसं।।
नवम अनुत्तर दश जिन भाखं, सहस चवालिस बनावे लाखं।

प्रश्न व्याकरण दशम विचारी, लाख बानवे सोल हजारी।।
ग्यारम सूत्र विपाक प्रकाशी, एक करोड़ लाख चौरासी।
चार कोटि पन्द्रह लख जानो, दो हजार पद सारे मानो।।
द्वादश दृष्टिवाद पन भेदी, एक सौ आठ कोटि पन वेदी।
अड़सठ लाख छप्पन हज्जारी, सहित पाँच पद ज्ञान प्रचारी।।
एक सौ बारह कोटि बताए, लाख तिरासी ऊपर गाए।
सहस अट्ठावन पंच बढ़ाएँ, द्वादश अंग सर्व पद पाएँ।।
कोटि इक्यावन अठलख जानो, सहस चौरासी छह सौ मानो।
साढ़े इक्कीस श्लोक निराले, इक इक पद तम हरने वाले।।

दोहा–जिनवाणी जिन देव कृत, देवे सम्यक् ज्ञान।
''विशद'' हृदय में धारकर, पाएँ शिव सोपान।।

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै! जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा–जिनवाणी में सरस्वती, पाया है शुभ नाम।
कृपा पात्र माँ के बनें, करते चरण प्रणाम।।

।।इत्याशीर्वाद पूष्पांजलिं क्षिपेत्।।

आचार्य श्री विशद सागरजी महाराज की पूजन

स्थापना

गौरव गाथा जिनकी गाके, आह्लाद हृदय में आता है।
दर्शन करके श्री गुरुवर का, माथ स्वयं झुक जाता है।।
जिन शासन के मार्ग प्रभावक, विशद सिन्धु है इनका नाम।
हृदय कमल में आह्वानन कर, करते बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। अत्र तिष्ठ: तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

यह कलश में जल भर लाए, जल धार कराने आए।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।१।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं

निर्वपामीति स्वाहा।

केशर चन्दन में गारा, भव ताप नाश हो सारा।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।२।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत से पूज रचाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।३।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व०स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, हम काम रोग विनशाएँ।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।४।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! कामरोग विनाशनाय पुष्पं निर्व०स्वाहा।

नैवेद्यस चढ़ाने लाए, अब क्षुधा नशाने आए।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।५।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व०स्वाहा।

है मोह कर्म का नाशी, ये दीपक ज्ञान प्रकाशी।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।६।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व०स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।७।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व०स्वाहा।

फल सरस चढ़ाने लाए, मुक्ती फल पाने आए।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।८।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व०स्वाहा।

वसु द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।९।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व०स्वाहा।

दोहा–शांती धारा जो करें, पावें शांती अपार।
शिव पद के राही बनें, होंवे भव से पार।।

।।शान्तये शान्तिधारा।।

दोहा–पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
कर्म अनादी से लगे, हो जावें निर्मूल।।

।।पूष्पांजलिं क्षिपेत्।।

जयमाला

दोहा–जयमाला गुरु आपकी, शब्दों में ना आय।
मोती सिन्धु के कभी, कोई क्या गिन पाय।।

(वीर छन्द)

क्षमामूर्ति हे गुरुवर तुमने, शिव पथ किया गमन है।
कर्म श्रृंखला को संयम से, तुमने किया समन है।।
पाकर के आदर्श आपके, यह जग हुआ चमन है।
ऐसे गुरुवर विशद सिन्धु पद, बारम्बार नमन है।।१।।
विशद सिन्धु जी इस जगती को, विशद बनाने वाले हैं।
वात्सल्य के रत्नाकर में, कमल खिलाने वाले हैं।।
वर्णन करना कठिन गुरु, शिवराह दिलाने वाले हैं।
मोह तिमिर से मोहित जग में, दीप जलाने वाले हैं।।२।।
विशद सिन्धु से झर-झर झरती, विशद गुणों की धारा है।
विशद सिन्धु ने संयम द्वारा, खोला शिव का द्वारा है।।
भक्तों ने यह जीवन अपना, किया समर्पित सारा है।
तुमने गुण गाना हे गुरुवर!, यह अधिकार हमारा है।।३।।
पञ्च महाव्रत समिति गुप्तियाँ, पञ्चेन्द्रिय जयवान कहे।
षट् आवश्यक पालन करते, पञ्चाचारी आप रहे।।
दश धर्मों को धारण करते, द्वादश तप धारी ऋषिराज।

गुरु आपकी अर्चा करता, तीन योग से सकल समाज।।४।।

दोहा–पूजा की है आपकी, भक्ति भाव के साथ।
चरण शरण में आपकी, झुका रहा मैं माथ।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय! जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व०स्वाहा।।

दोहा–विशद गुणों के कोष हैं, विशद सिन्धु है नाम।
विशद भाव से आज हम, करते चरण प्रणाम।।

।।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

आरती

तर्ज–भक्ति बेकरार है...

श्री जिनवर अविकार हैं, अतिशय मंगलकार हैं–२
यागमण्डल की आरति कर हम, करते जय-जयकार हैं-२।टेक।
परमेष्ठी हैं पाँच हमारे, जग में अतिशयकारी जी-२
मंगल उत्तम शरण चार हैं, इनकी महिमा न्यारी जी-२
श्री जिनवर...।।१।।
भूत-भविष्यत-वर्तमान के, चौबिस जिनवर जानो जी-२
इनकी महिमा सर्वलोक में, सर्वश्रेष्ठ पहिचानो जी-२
श्री जिनवर...।।२।।
पंच विदेहों के विदेह उप, एक सौ आठ कहाए जी-२
विद्यमान तीर्थंकर उनमें, बीस जिनेश्वर गाए जी-२
श्री जिनवर...।।३।।
पंचाचार का पालन करते, जिन दीक्षा के दाता जी-२
उपाध्याय उपदेशक होते, सबके भाग्य विधाता जी-२
श्री जिनवर...।।४।।
'विशद' साधु रत्नत्रयधारी, तप से ऋद्धी पाते जी-२
जैनधर्म आगम चैत्यालय, जिन प्रतिमा को ध्याते जी-२
श्री जिनवर...।।५।।

●